रंगमोहल दक्षीण दिशा की शोभा

धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के।।

नूर नीर खीर दधि सागर , घृत मधु इक ठौर ।
रस सर्वरस सागर , बिन मोमिन ना पावे और ।।

रंगमोहल दक्षीण दिशा की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

- ➢ बट पीपल की चौकी
- ➢ कुंज निकुंज वन
- ✓ होज कोसर
- ➢ चौबीस हांस के महल
- ➢ मानिक पहाड़

1 2 3

धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के।।

4

नूर नीर खीर दधि सागर , घृत मधु इक ठौर ।
रस सर्वरस सागर , बिन मोमिन ना पावे और ।।

परमधाम विहार
सुखपाल, तख्तरवा से
होज कोसर

शुक्ल पक्ष (सुद)	
चतुदरसी	**होज कोसर**

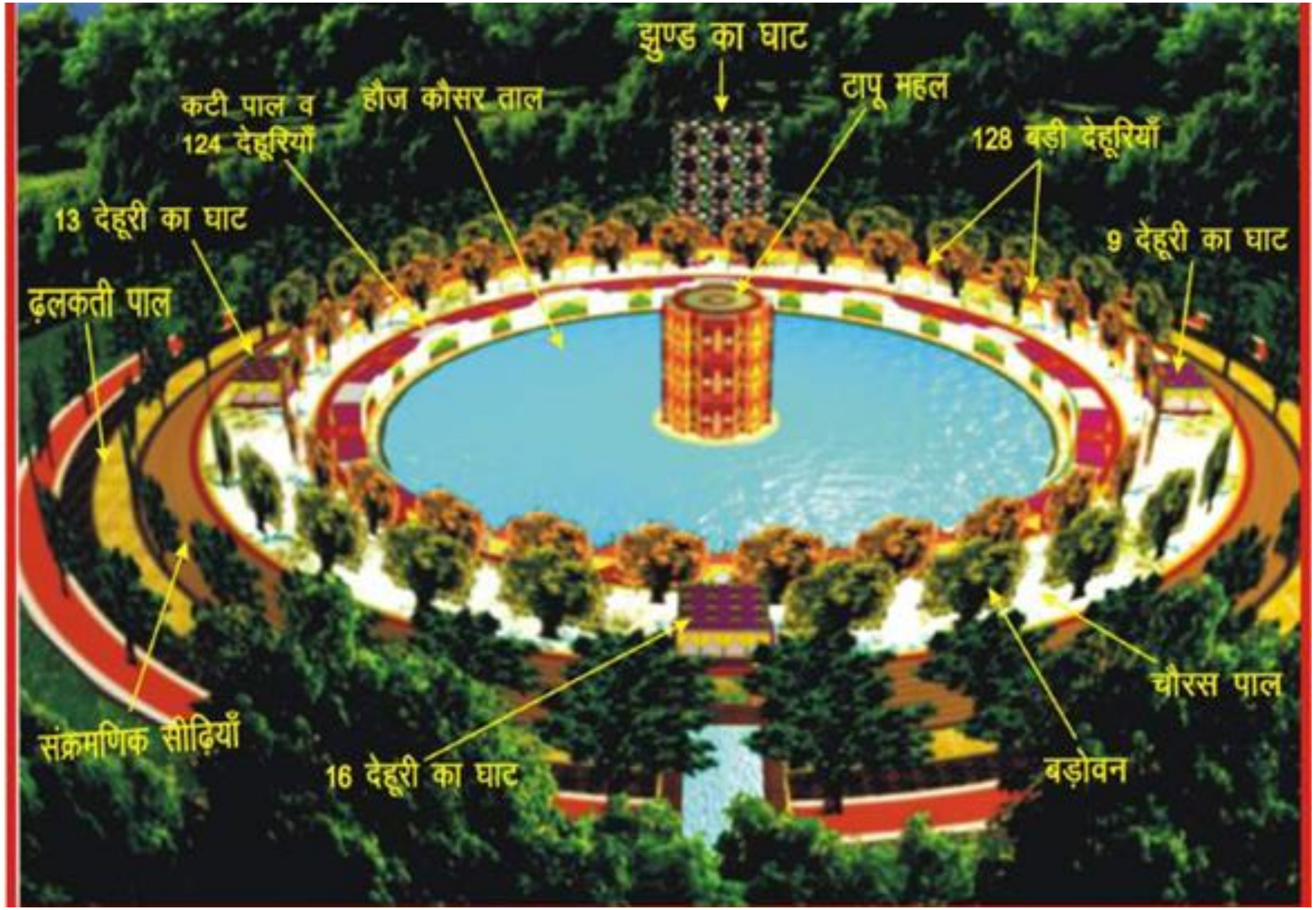

Joy Of
हौज कोसर

- जमुनाजी (पूर्व)
- रोंस – जल , वन, पुखराजी
- ढलकती पाल
- संक्रमणीक सीढ़ियाँ
- चोरस पाल – कटी पाल, बड़ी देहूरियां, पडसाल, धाट
- पश्चिम का चबूतरा & देहूरी
- बड़ों वन के वृक्ष (5 भोम) & हिंडोला
- पाल के अंदर की मोहलात (750 मंदिर)
- ताल (128 हांस , 17500 मंदिर लंबा चोडा)
- टापू मोहल (64 हांस, 3 भोम & 4th चादनी)

अब कहूं में ताल की, अन्दर आए सको सो आओ।
जो होवे रूह अर्स की, फेर ऐसा न पावे दाओ ।।१।।

जब हक आवत ताल को , आए विराजत इत ।
सो खेल जल का करके , ऊपर सौक को बैठत ।।

Architecture Of हौज कोसर

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

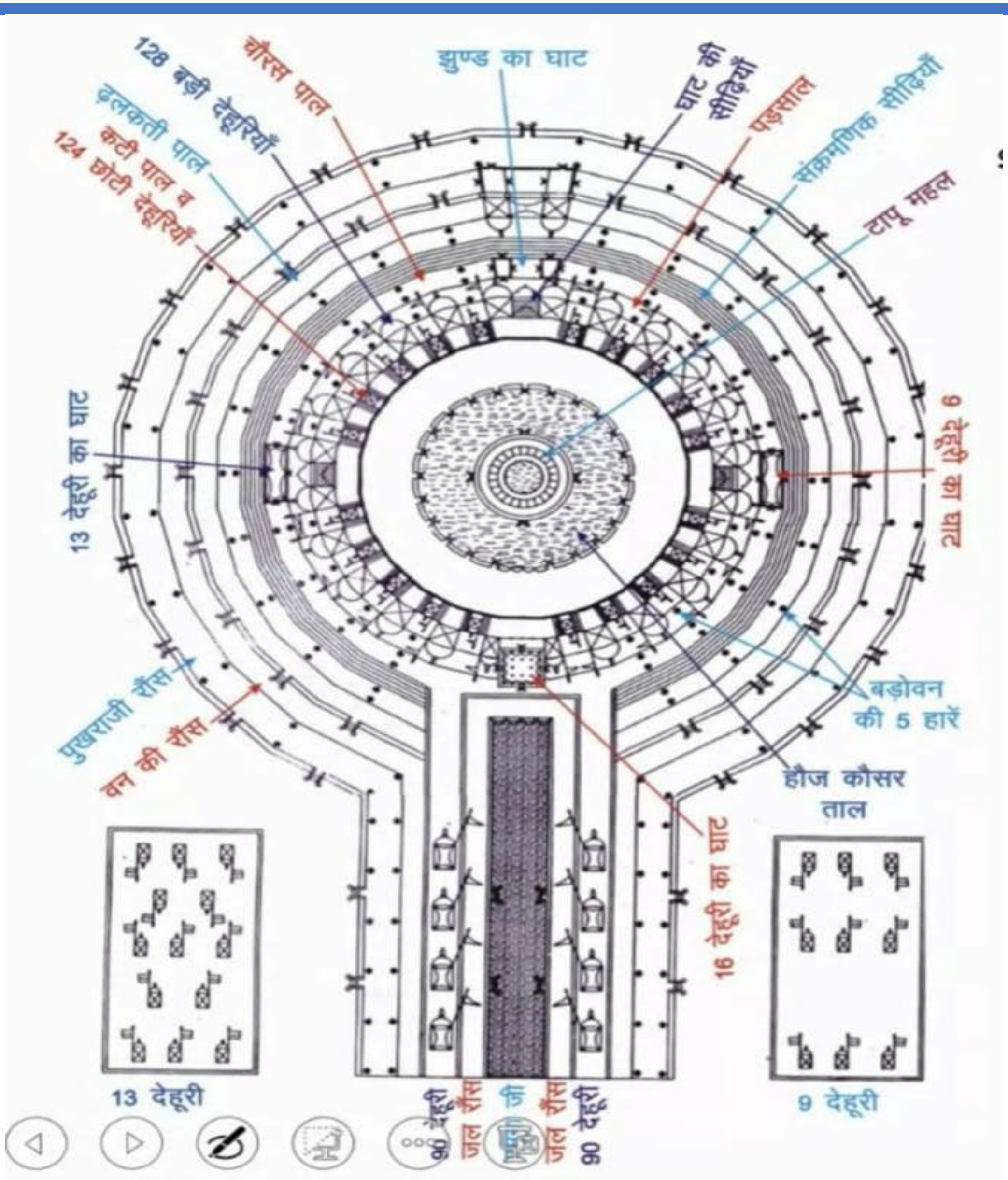

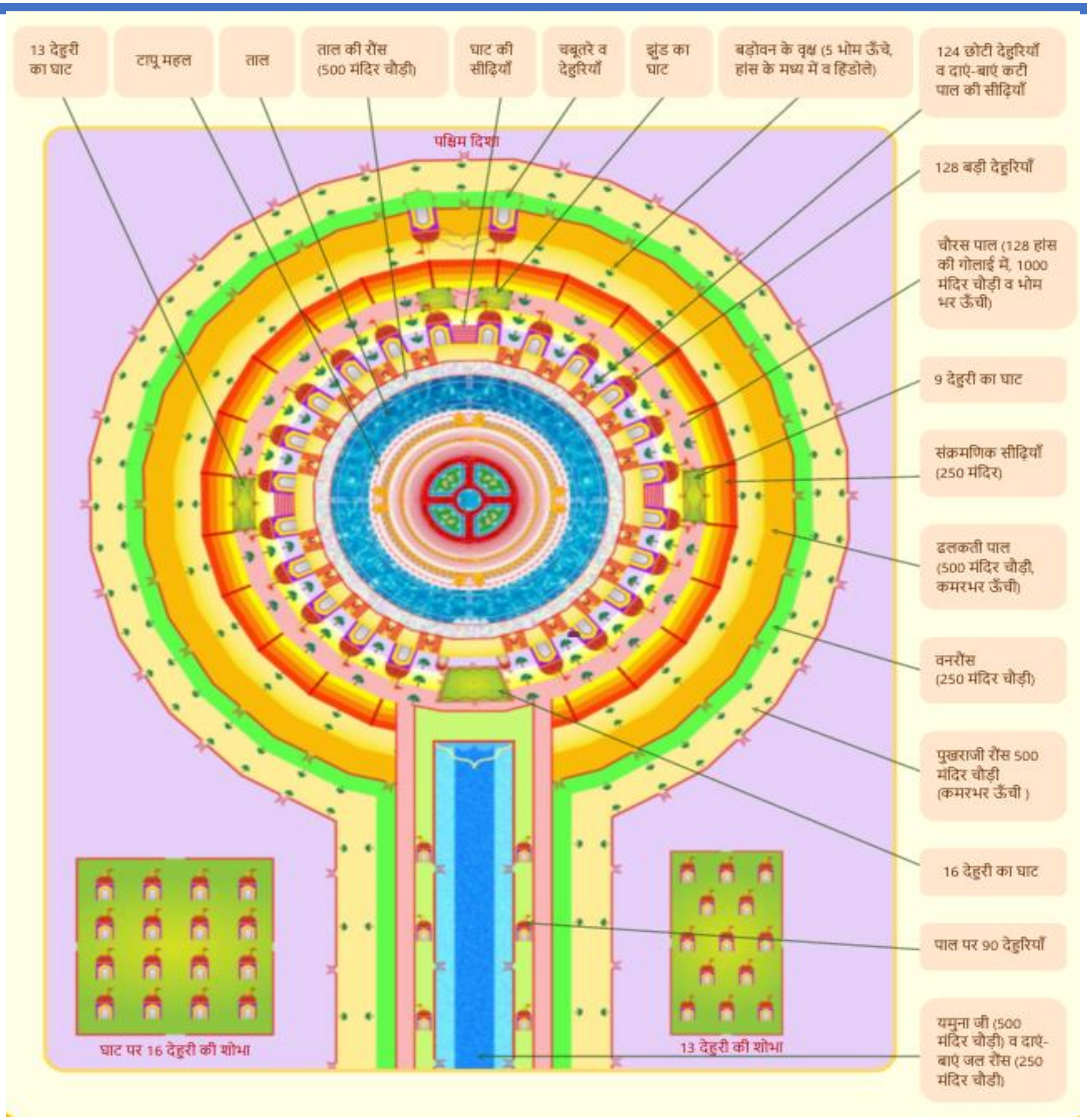

Architecture Of हौज कोसर & परमधाम

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

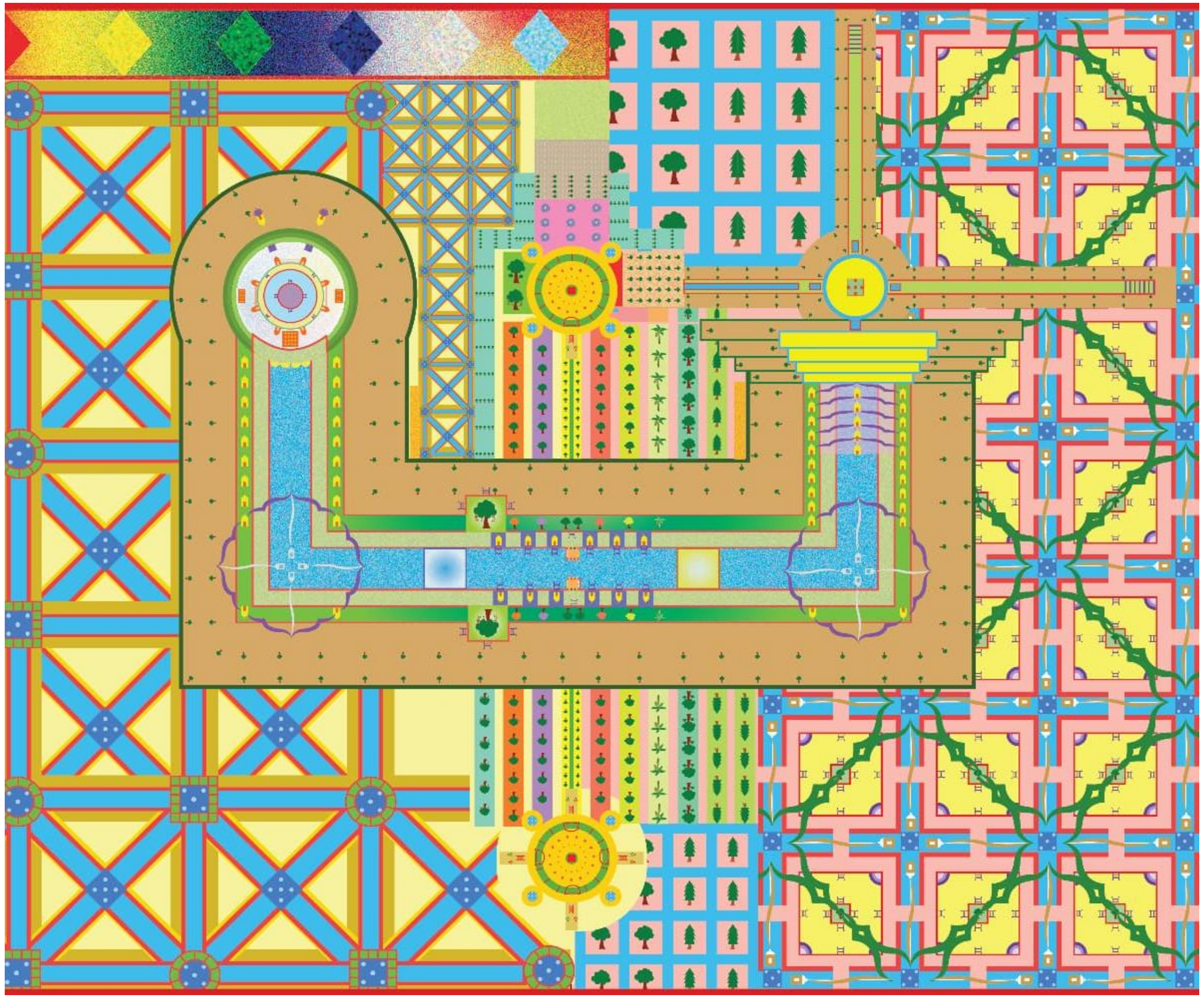

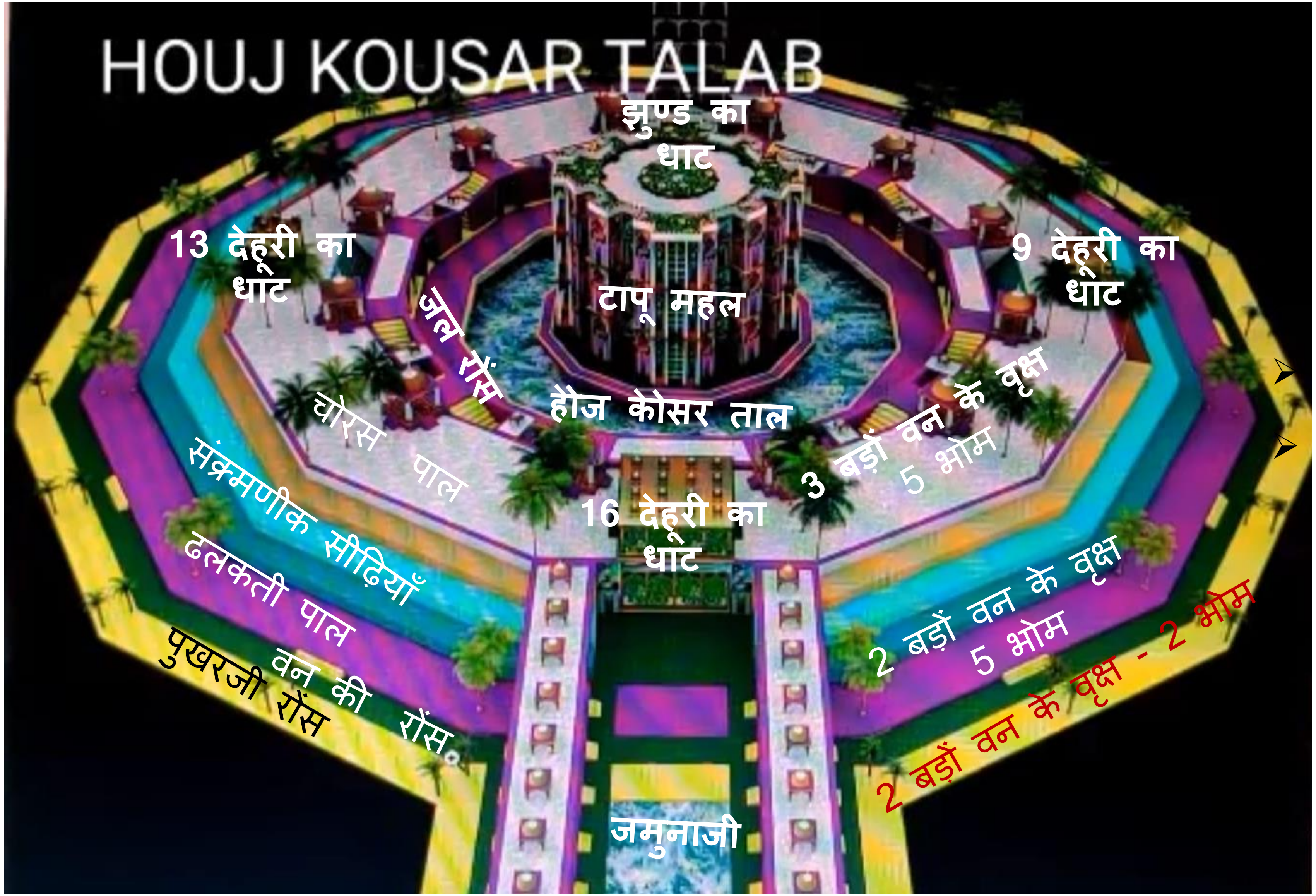

होज कोसर पाल के ऊपर की शोभा

रोंस :

- जल (500 मंदिर)
- वन (250 मंदिर)
- पुखराजी (500 मंदिर)

ढलकती पाल (500 मंदिर)

- संक्रमणीक सीढ़ियाँ (250 मंदिर)
- चोरस पाल (128 हांस - 1000 मंदिर, 1 भोम)
  - कटी पाल (250 मंदिर):
    - छोटी देहूरियाँ – (100 x 100 मंदिर 124)
  - बड़ी देहरियां (250 x 250 मंदिर - 128)
    - **घाटकी सिडियां** (उत्तर, दक्षिण, पश्चिम)
  - पडसाल (250 मंदिर)
  - घाट(250 मंदिर)
    - 16 देहूरी का घाट (500 x 500 मंदिर)
      - ❖ कुंड
    - 9 देहूरी का घाट (250 x 500 मंदिर)
    - 13 देहूरी का घाट (250 x 500 मंदिर)
    - झुण्ड का घाट (250 x 500 मंदिर)

हौज कोसर पाल के ऊपर की शोभा

होज कोसर पाल के ऊपर की शोभा

हौज कोसर पाल के ऊपर की शोभा - संक्रमणीक सीढ़ियाँ

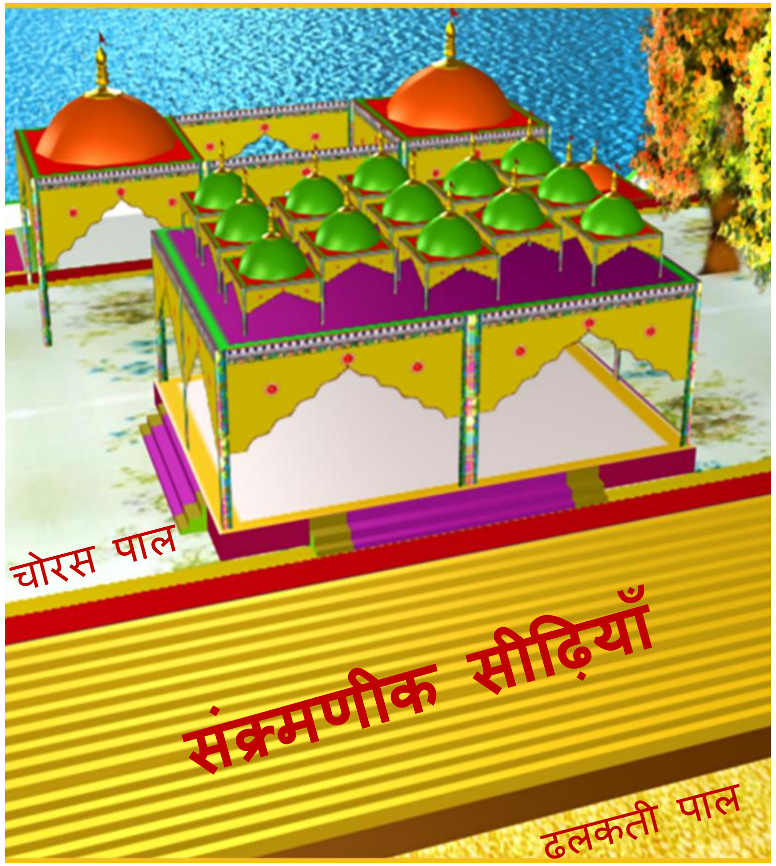

चोरस पाल - बड़ी देहूरियां
250 x 250 मंदिर
बड़ी देहूरियां – 128 , 2 हांस जोड़ी पर

कटी पाल

चांदा (250 x 250 मंदिर)
सीढ़ियाँ (1 भोम)
चोक – (125 x 250 मंदिर)
छोटी देहुरियां - 124 (100 x 100 मंदिर)
छोटे दरवाजे
बड़े दरवाजे

ऊपर पाल जो द्योहरी, फिरती आगूं गिरदवाए ।
तिन सबों आगूं चबूतरा, तिन दोऊ तरफों उतराए ॥३६॥
यों द्योहरी सब चबूतरों, तिन सीढ़ियां सबको ।
हर द्योहरी हर चबूतरे, सीढ़ियां दोऊ तरफों ॥३७॥
दो सीढ़ियों के बीच में, तले चबूतरे द्वार ।
तिन सब सीढ़ियों परकोटे, चढ़ती कांगरी दोऊ किनार ॥३८॥
सीढ़ियों पर जो चबूतरे, तिन तले सब मेहेराब ।
मेहेराब आगूं जो चबूतरा, सोभित है ढ़िग आब[1] ॥३९॥
दो दो सीढ़ियों के बीच में, ए जो छोटे कहे दो द्वार ।
तिन पर अजब कांगरी[2], अति सोभित पाल अपार ॥४०॥

हौज कोसर पाल के ऊपर की शोभा - चोरस पाल की कटी पाल

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

कटी पाल @
16 देहूरी घाट
जल रोंस पर

होज कोसर पाल के ऊपर की शोभा - चोरस पाल की कटी पाल

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

कटी पाल @

झुण्ड घाट, 9 &13 देहूरी घाट

जल रोंस पर

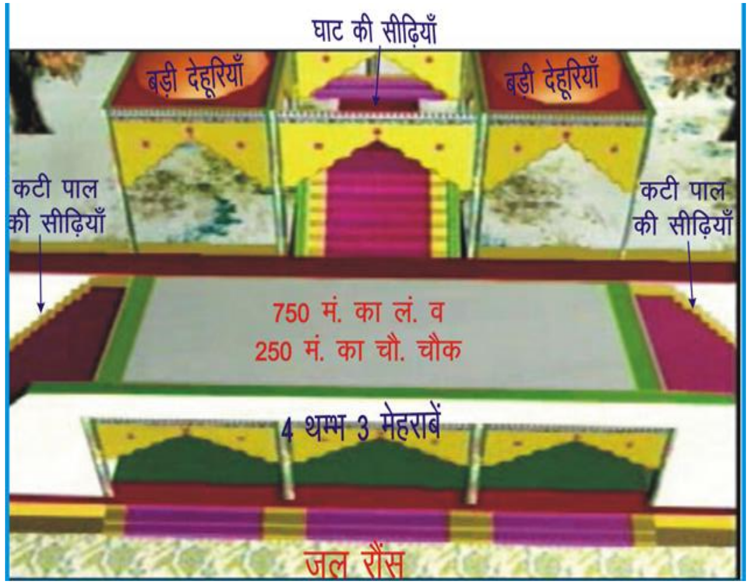

हौज कोसर पाल के ऊपर की शोभा - चोरस पाल की पड़साल

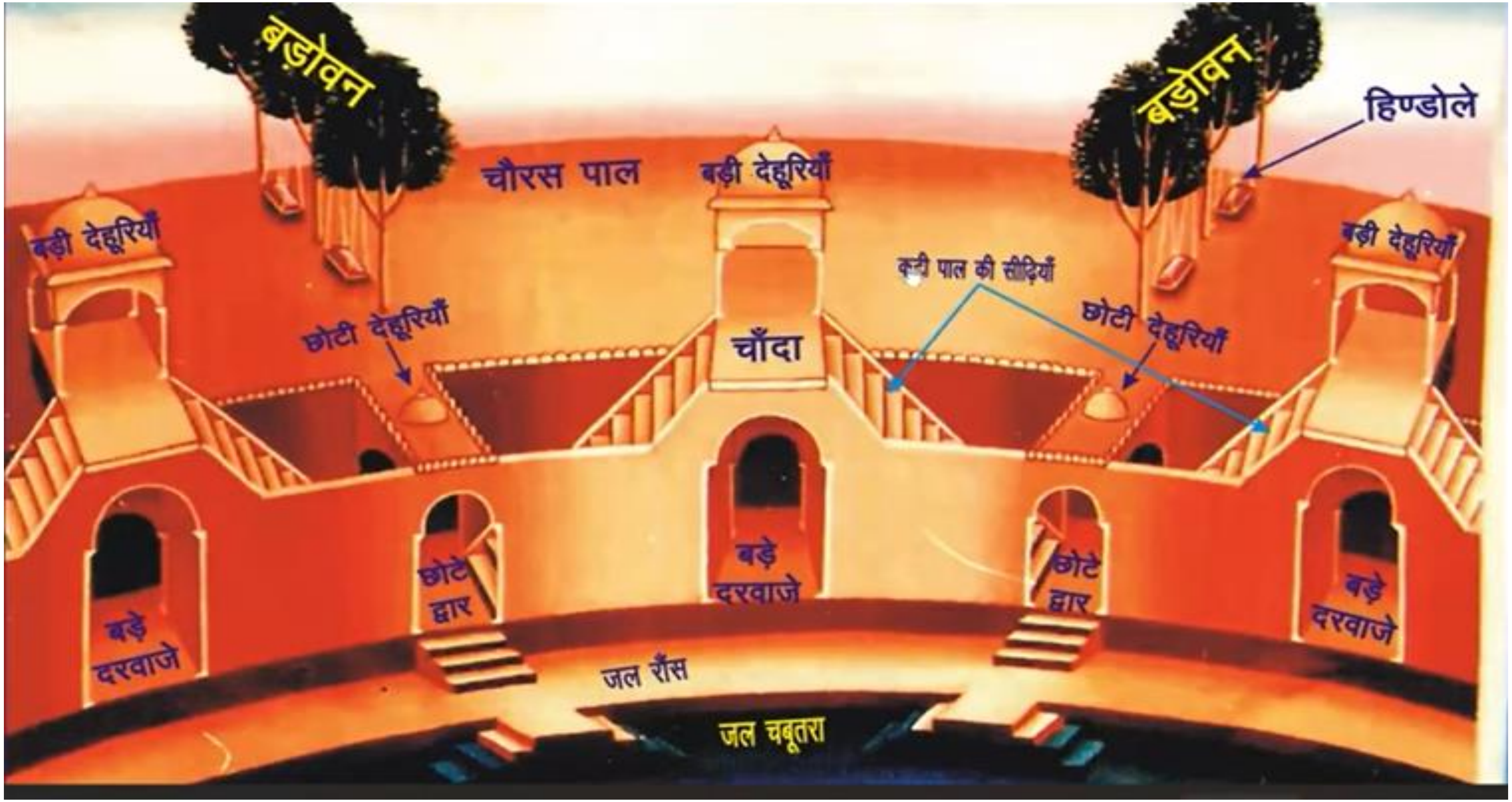

पडसाल : 250 मंदिर

5 बड़ो वन के वृक्ष

2 ढलकती पाल पर
&
3 चोरस पाल पर

पाल ऊपर जो द्योहरी , बीच कठेड़ा सबन ।
ए बैठक शोभा लेत है , कहा कहूँ जुबां इन ।।

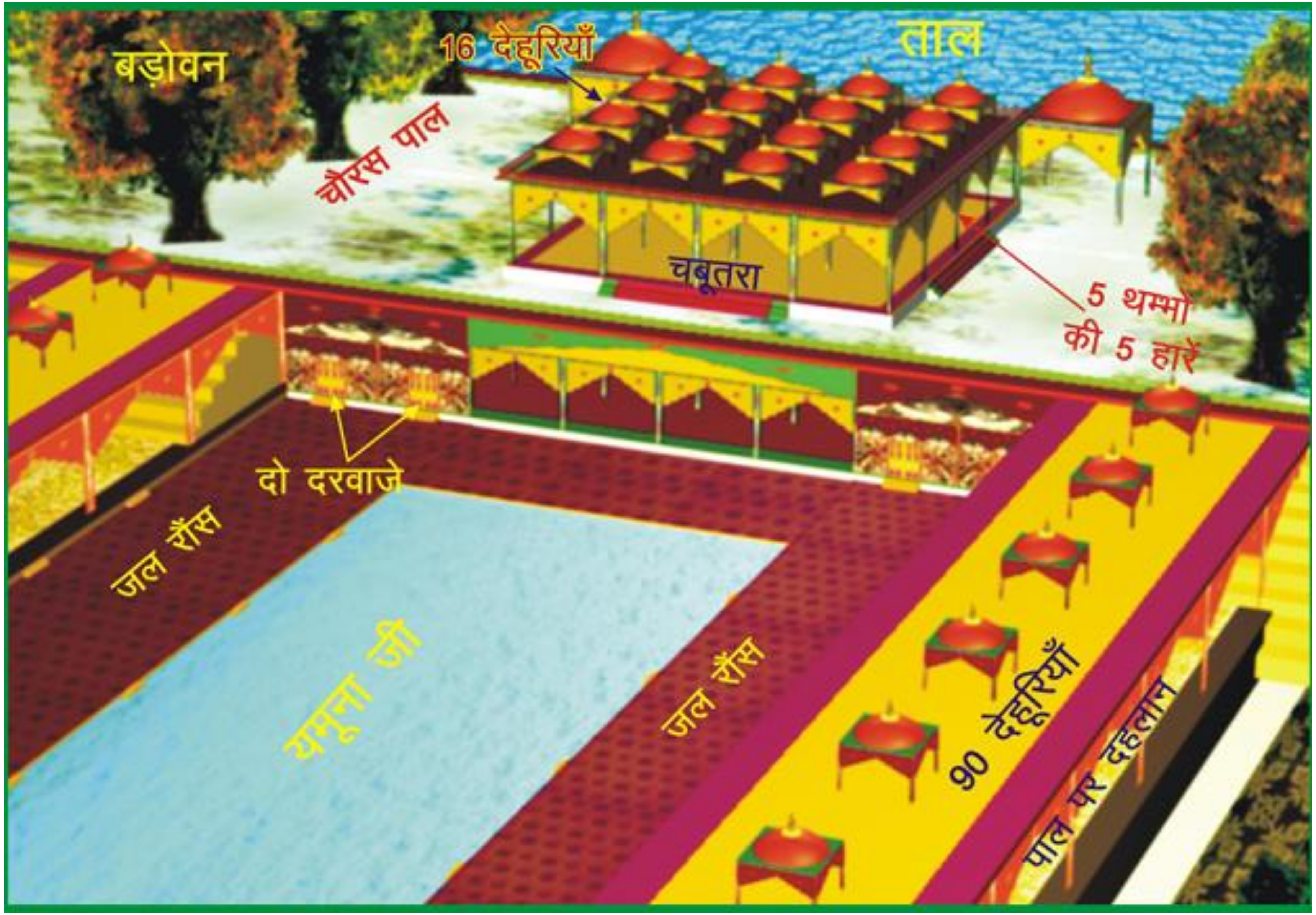

चोरस पाल – पूर्व

16 देहूरी का घाट

जमुनाजी
90 देहूरीयां
चबूतरा & थंभो
कुंड
ताल

होज कोसर पाल के ऊपर की शोभा - चोरस पाल पर 16 देहूरी का घाट

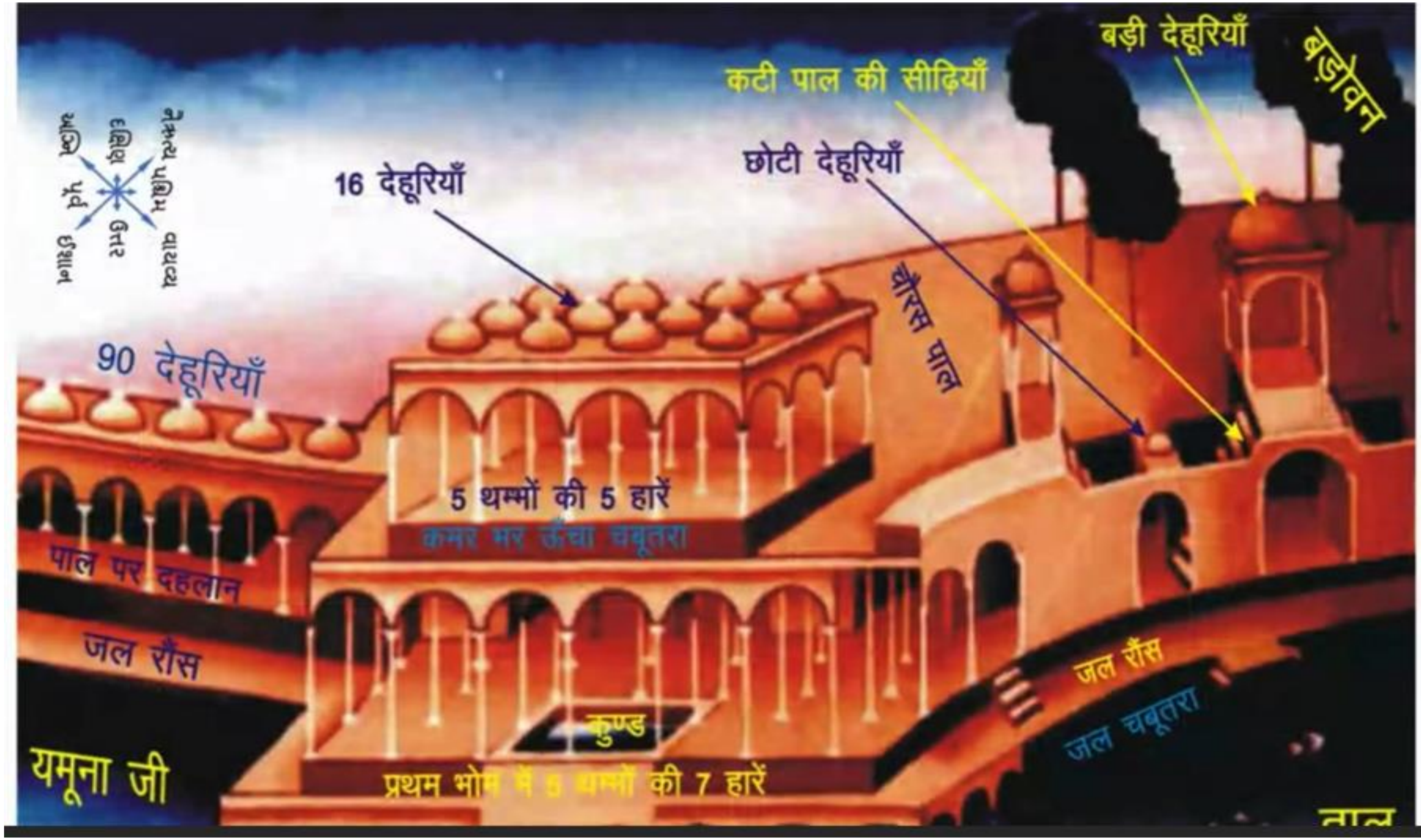

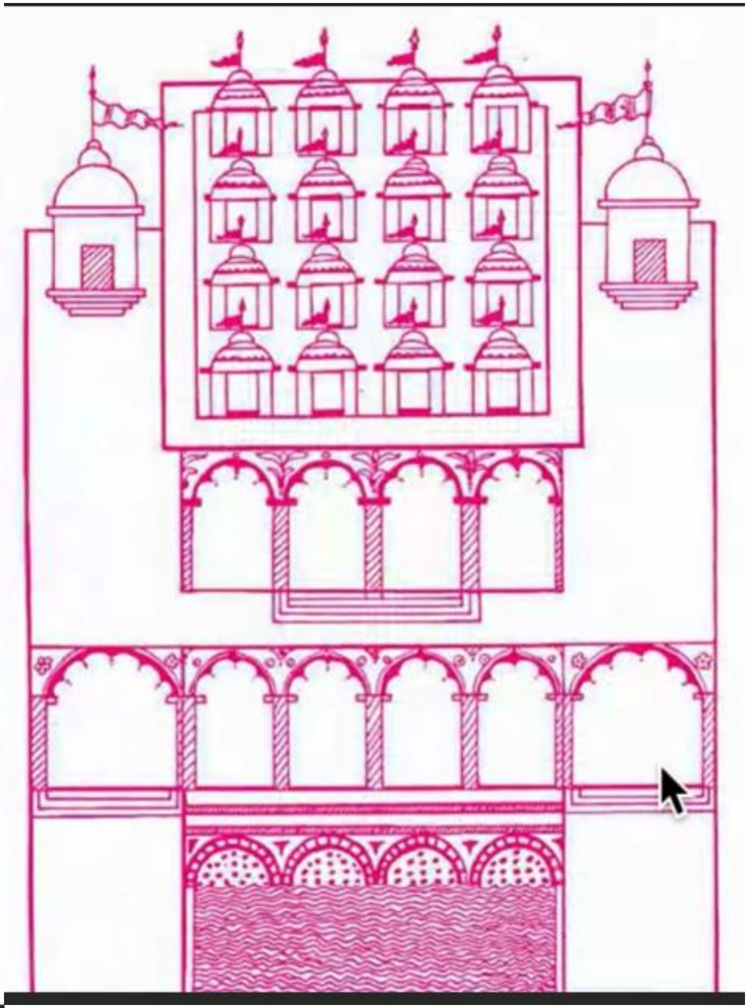

मोमिन होए सो देखियो, तुमारा दिल कह्या अर्स ।
चारों घाट लीजो दिल में, दिल ज्यों होए अरस-परस ॥७८॥

जो अंदर चारों घड़नाले, आगूं चबूतरा जल पर ।
तले जल जाली बारों आवत, सोभा इन घाट कहूं क्यों कर ।।६४।।

तले जाली द्वारें पाल में , जित जल रह्या समाए ।
इत बैठ झरोखों देखिए , जानों पूर आवत है धाए ।।

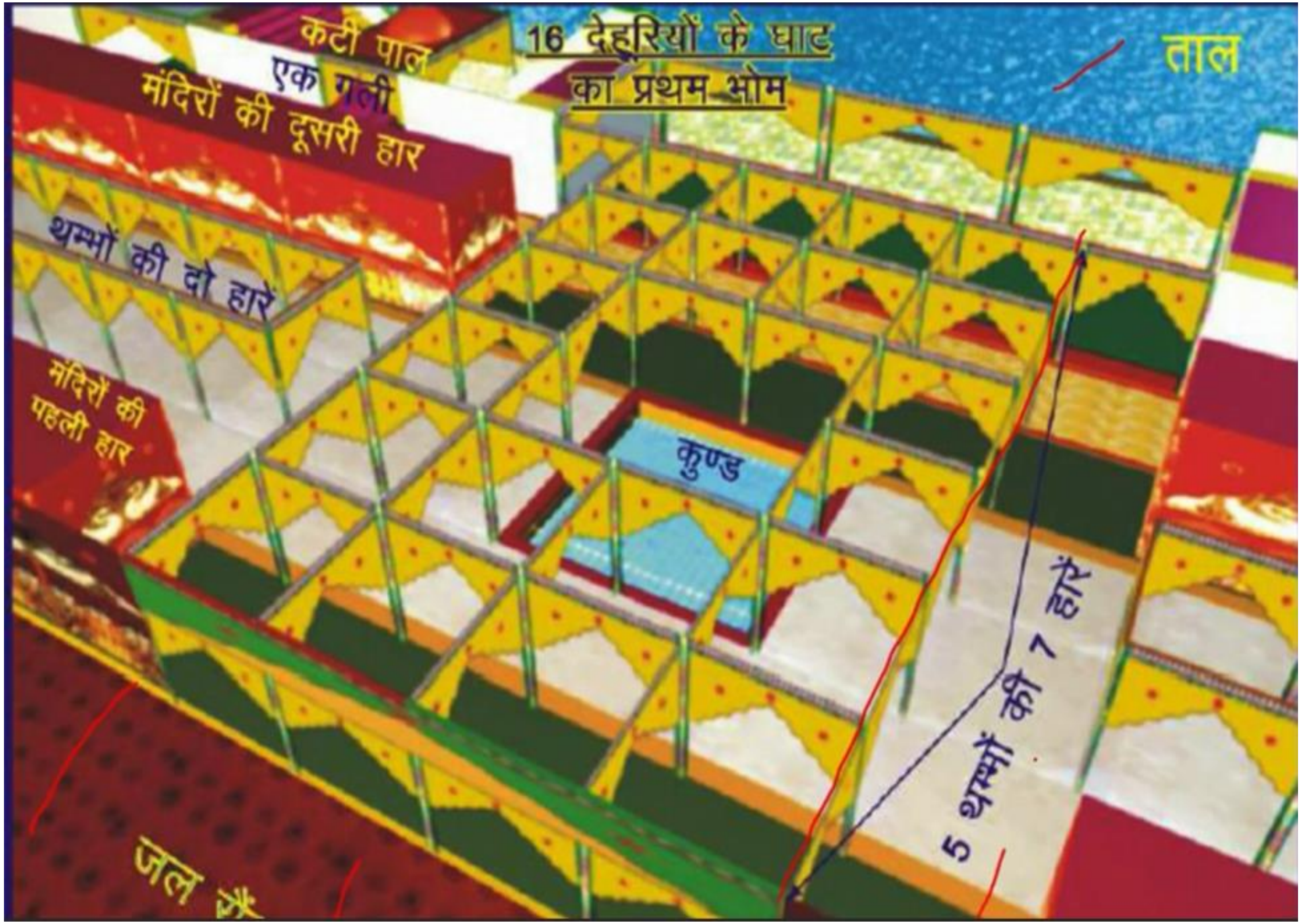

16 देहूरी का घाट
पहली भोम की शोभा
@ जल रोंस Level

चार द्योहरियां लग लग, चारों तरफों चार चार ।
सोले बंध पर द्योहरी, थंभ पचीस पांच पांच हार ॥५५॥
पचीस थंभ ऊपर कहे, तले सोले थंभ गिरदवाए ।
सो पोहोंचे दूजी भोम में, भोम बीच की अति सोभाए ॥५६॥

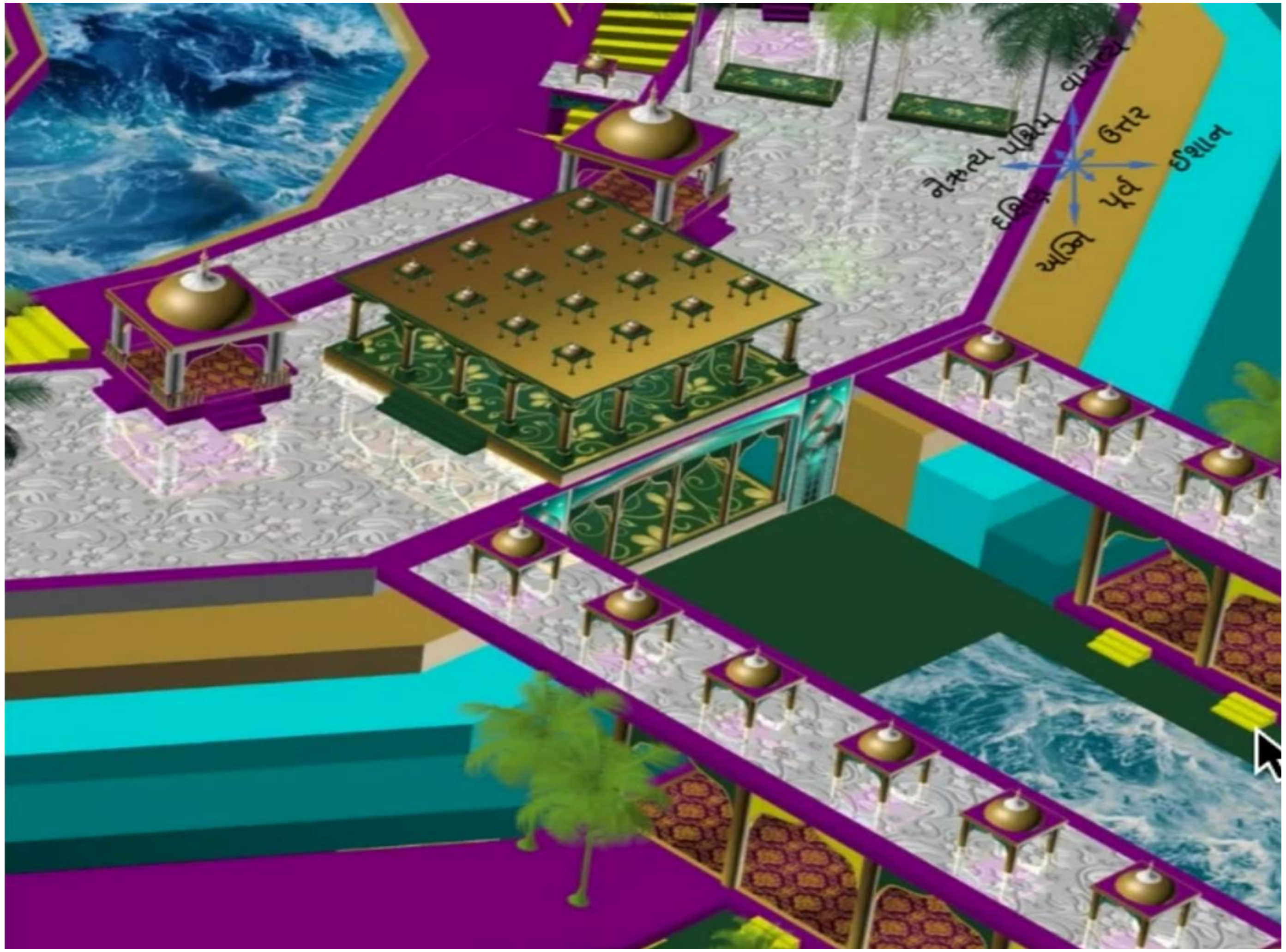

जमुना तरफ ताल के , जित जल भिल्या माहें जल ।
द्योहरियाँ इन बंध पर , जल पर शोभित महल ।।

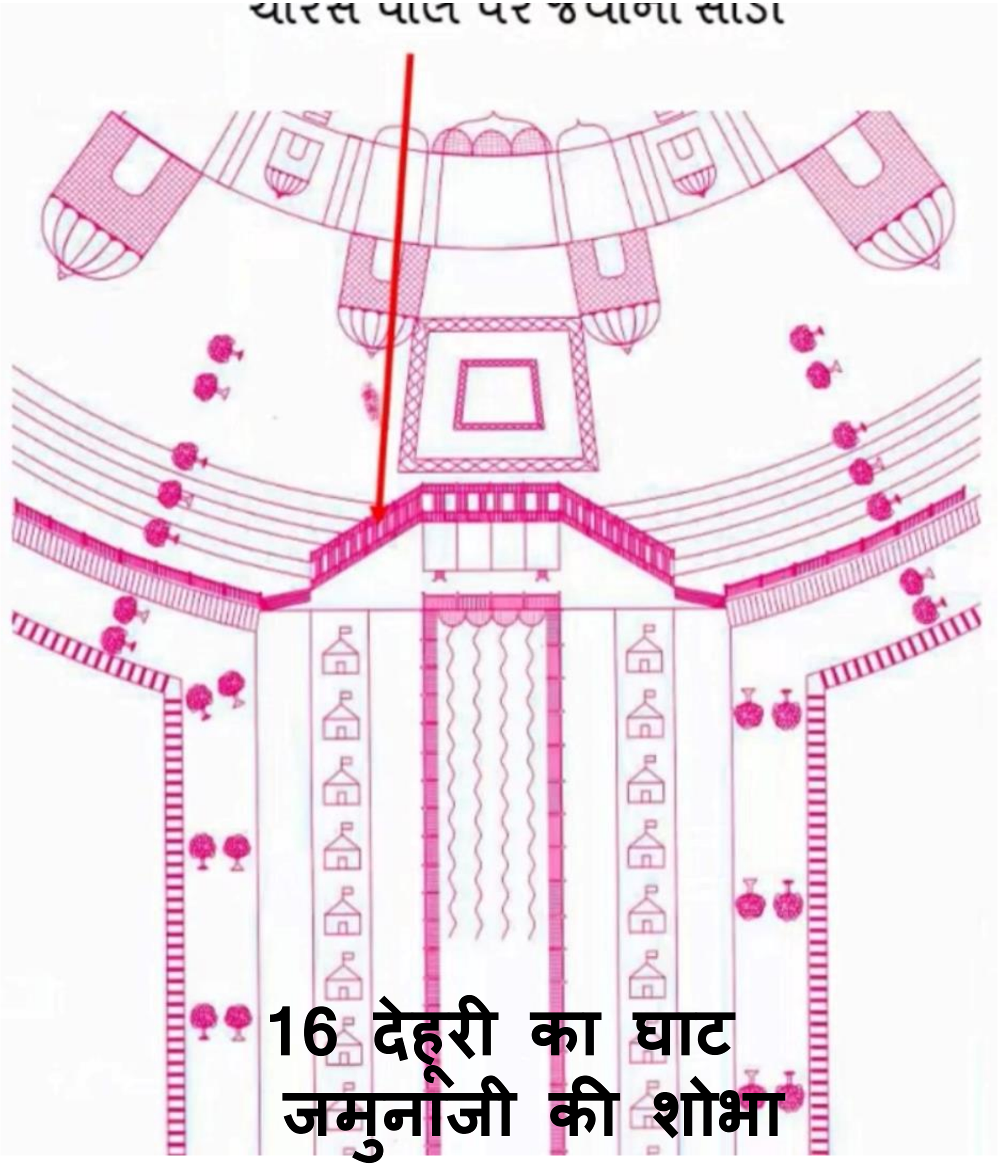

16 देहूरी का घाट
जमुनाजी की शोभा

होज कोसर पाल के ऊपर की शोभा - चोरस पाल पर 16 देहूरी का घाट

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

16 देहूरी का घाट
जल रोंस पर

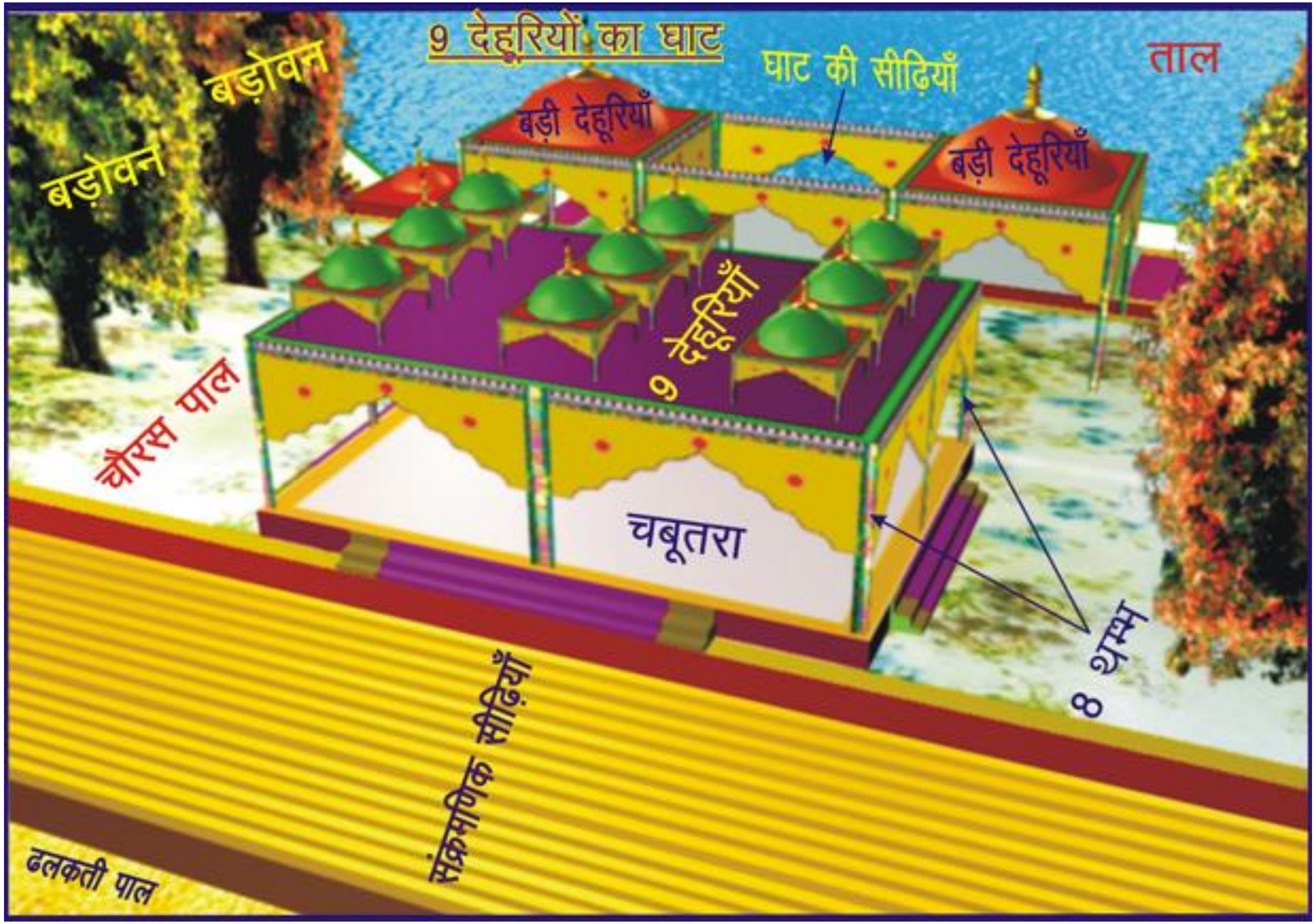

चोरस पाल – उत्तर
9 देहूरी का घाट

घाट बांईं तरफ का, चौथे हिस्से तक ।
ऊपर झुण्ड बिराजिया, अति सोभा बुजरक ॥४२॥
ऊपर बनी नव द्योहरी, फिरते आए तले आठ थंभ ।
अदभुत बन्या है कठेड़ा, ए बैठक अति अचंभ ॥४३॥

चोरस पाल - दक्षिण 13 देहूरी का घाट

चौक पर फिरती चांदनी, आठ द्योहरी गिरदवाए।
पांच द्योहरियां बीच में, तले आठ थंभ सोभाए ॥७१॥

जब आवत इत अर्स से, चढ़िए इन घाट ताल ।
चबूतरे दोए द्योहरी, सीढ़ियां चढ़ते होत खुसाल ।।३।।

चोरस पाल - पश्चिम झुण्ड का घाट

- पश्चिम का चबूतरा & देहूरी
- झुण्ड का घाट
  5 भोम & 6th चादनी
- घाटकी सिडियां

हौज कोसर पाल के ऊपर की शोभा - चोरस पाल पर झुण्ड का घाट

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

ए जो कही दो द्योहरी, तिन बीच पौरी दोए।
एक आगूं चबूतरा, दूजी आगूं द्योहरी सोए ।।४।।
इतथें सीढ़ियां चढ़ती, ऊपर आए पोहोंची किनार।
दोऊ तरफ दोए चबूतरे, बीच चौक खूंटों चार ।।५।।
ए बड़ा घाट तरफ अर्स के, फिरते तीन घाट तरफ और।
बने गिरदवाए पाल पर, जुदी जिनसों चारों ठौर ।।६।।

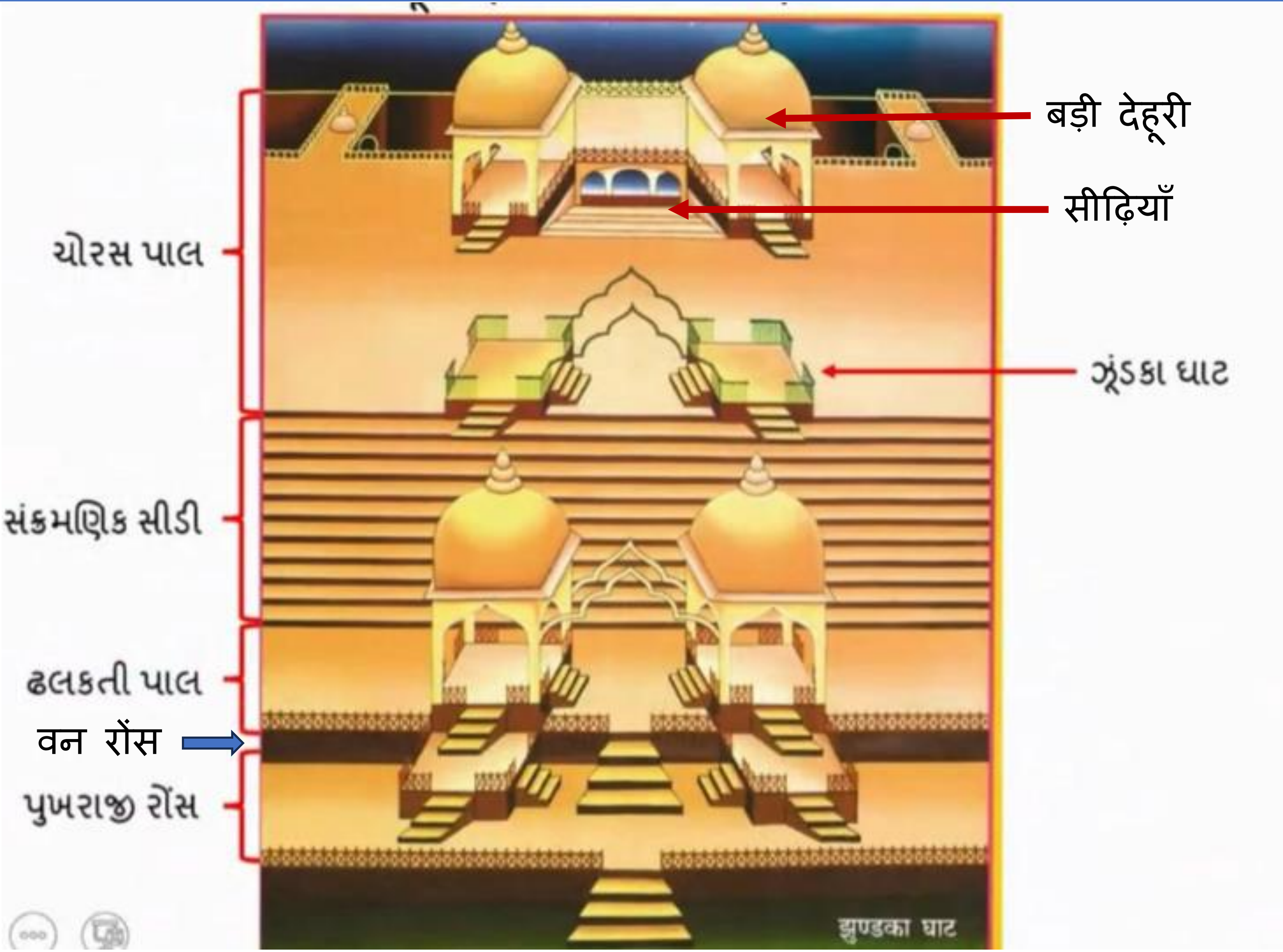
बड़ी देहूरी
सीढ़ियाँ
ઝૂંડકા ઘાટ
ચોરસ પાલ
સંક્રમણિક સીડી
ઢલકતી પાલ
वन रोंस
પુખરાજી રોંસ
झुण्डका घाट

झुण्ड का घाट

पश्चिम का चबूतरा (वन रोंस पर)
&
देहूरी (ढलकती पाल पर)

झुण्ड के घाट को दोए लगे, तरफ पश्चिम जान ।
इन दोऊ के बीच में, चौक पड़ा दरम्यान ॥५॥

आठ दिवाल दरखत की, दरम्यान द्वार है चार ।
छे छाते तिन उपर, ए शोभा अति सुखकार ।
ज्यों एक त्यों ही दूसरे, आठ हार दरखत ।
चारों कोने तिन के, चार द्वार शोभा इत ।

जब आइए पाल के उपर, गृद हिंडोले होए ।
हक हादीं रूहें, हींचत हैं इत सोए ।।

झुण्ड का घाट
घाट की सिडियां
जल रोंस

इन चबूतरों पर बनी, देहुरीयां नूर दोए ।
भई एक छात दोनों की, दोए द्वार मेहेराबी बने सोए ।।

हौज कोसर पाल के ऊपर की शोभा - झुण्ड का घाट

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

चौथा द्वार देहुरी का, चबुतरे सनमुख ।
हक हादी रूहें खेलत, सुन मोमिन पावत सुख ॥

जब आवत इत अर्स से, चढ़िए इन घाट ताल ।
चबूतरे दोए द्योहरी, सीढ़ियां चढ़ते होत खुसाल ॥

जब आइए पाल के उपर, गृद हिंडोले होए ।
हक हार्दी रूहें, हींचत हैं इत सोए ॥

जब हक आवत ताल को, आए बिराजत इत ।
सो खेल जल का करके, ऊपर सौक[1] को बैठत ॥

कई रंग इन दरखतों, अनेक रंग इन पात ।
अनेक रंग फल फूल में, याकी इतहीं होवे बात ॥

दस द्वार बारे भासत, दरम्यान खड़े होए जब ।
रूह की आंखो देखिए, सुख हौज कौसर पाइए तब ।

तिन तीनों चौको के द्वार में, खड़े रहिए जब ।
टापू तलाब मध्य का, सब नजरों आवत तब ॥

चोरस पाल की अंदर की मोहलात की शोभा (750 मंदिर)

- 2 मंदिर की हार
  (250 मंदिर लम्बे x 125 मंदिर चौडे)
- 2 थंभो की हार
  (125-125 मंदिर की दूरी पर)
- हिंडोला

अब क्यों कहूँ पाल अंदर की , कई थंभ कई मोहलात ।
कई देहलाने कई मंदिर, ऐ खूबी कही न जात।। परि. 8/87

थंभ दोए हारें बनी, अंदर मोहोल कई और ।
कई बैठकें जुदी जुदी जिनसों, कहां लग कहूं कई ठौर ।।८८।।

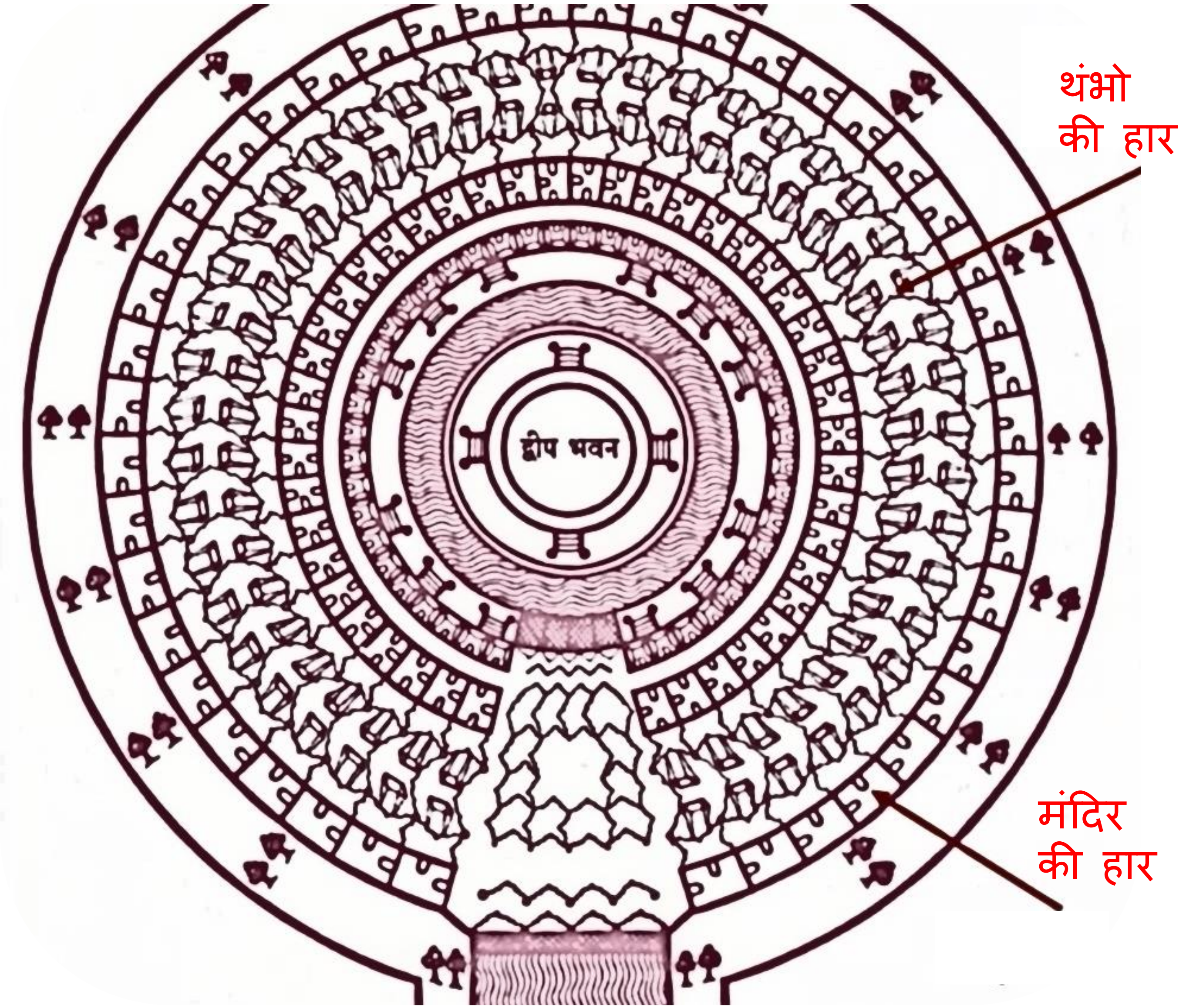
थंभो
की हार
द्वीप भवन
मंदिर
की हार

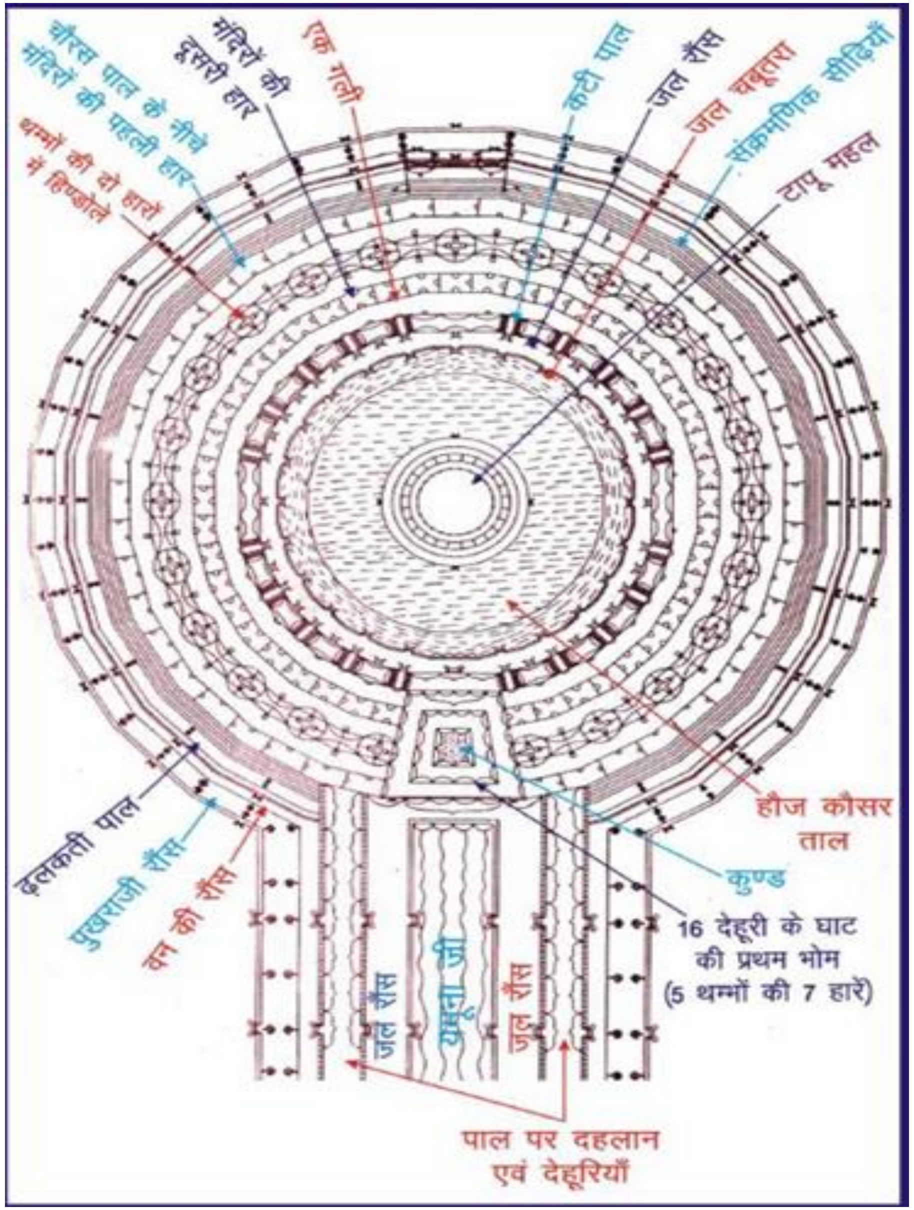
चौरस पाल के नीचे
मंदिरों की पहली हार
थम्भों की दो हारें
में हिण्डोले
मंदिरों की
दूसरी हार
एक गली
कटी पाल
जल रौंस
जल चबूतरा
संक्रमणिक सीढ़ियाँ
टापू महल
हौज कौसर
ताल
कुण्ड
16 देहूरी के घाट
की प्रथम भोम
(5 थम्भों की 7 हारें)
ढलकती पाल
पुखराजी रौंस
वन की रौंस
जल रौंस
यमुना जी
जल रौंस
पाल पर दहलान
एवं देहूरियाँ

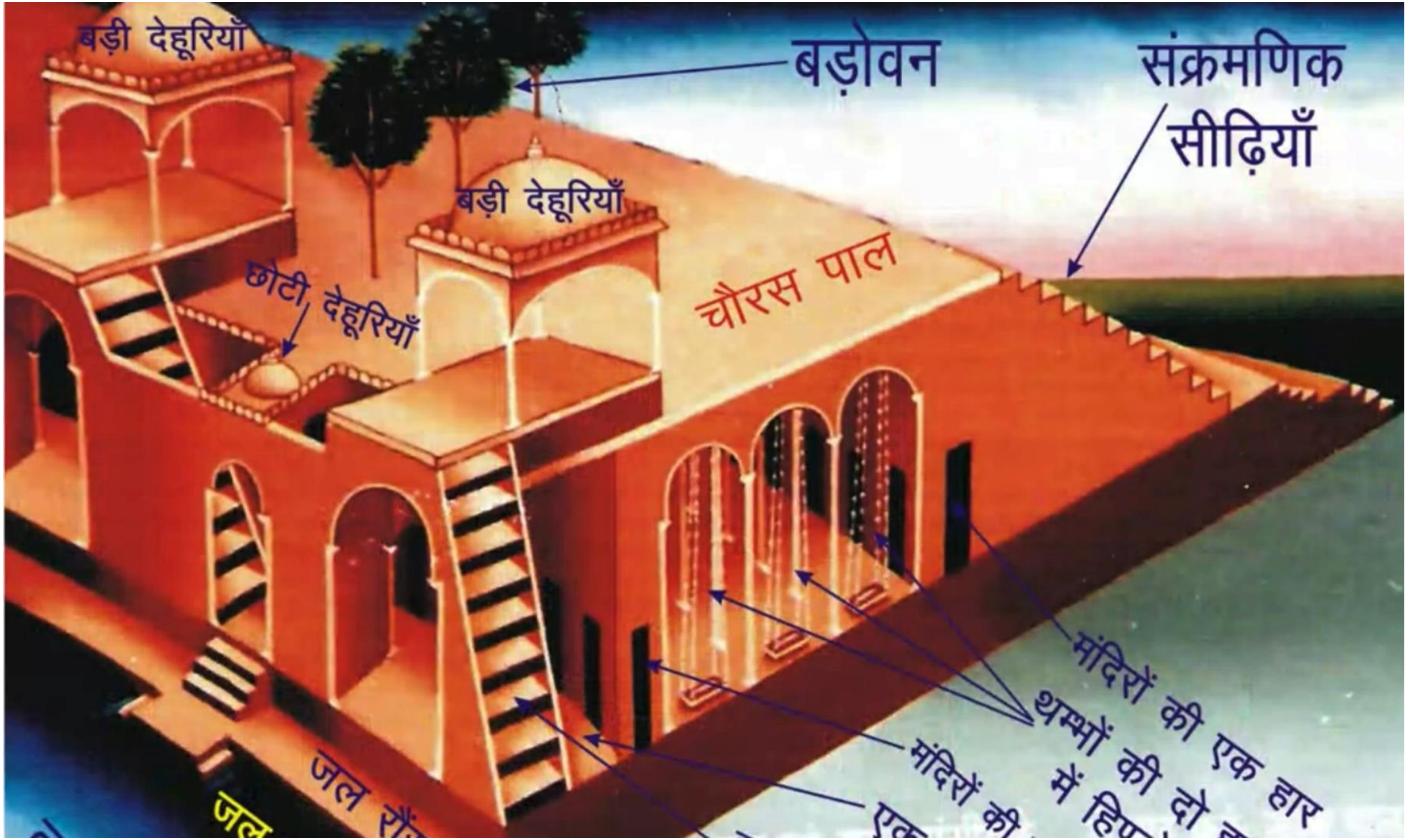
बड़ी देहूरियाँ
बड़ोवन
संक्रमणिक
सीढ़ियाँ
बड़ी देहूरियाँ
छोटी देहूरियाँ
चौरस पाल
मंदिरों की एक हार

होज कोसर ताल

होज कोसर ताल – 128 हांस
(17,500 मंदिर लंबा-चोडा)

- जल रोंस
- सीढ़ियाँ

हौज कोसर टापू महल

6000 मंदिर लंबा-चौडा , 64 हांस

3 भोम & 4th चादनी

- जल रौंस
- परिक्रमा रौंस - कमर भर ऊँचा चबूतरा
- गुर्ज – 64 , 125 x 125 मंदिर लंबा-चौडा
- मंदिर – 60, 250 x 125 मंदिर लंबा-चौडा
- दिशा के दरवाजे : 4, 750 मंदिर
  - दरवाजा : 250 मंदिर
  - चबूतरा : 250 x 250 मंदिर लंबा-चौडा
- चबूतरा, बगीचा & कुण्ड

ज्यों एक फूल चौसठ पांखड़ी , चार द्वार बने गिरदवाए ।
गुरज साठ बने तिन पर , ए खूबी कही न जाए ।।

महामत कहे मोमिन को , गेहरा गंभीर जल देख ।
टापू बन्यो बीच हौज के , सोभित अति विसेख ।।

इत रंग जवेरन के, हांस हांस के होए ।
सामे वही रंग शोभित, बिना मोमिन ना जाने कोए ।।

कमल फूल भी यों ही है, जिन हांस तले जो कोए ।
तैसे ही रंग ले उठे, क्यूं कहूं शोभा इत सोए ।।५८।।

हौज कोसर - टापू महल

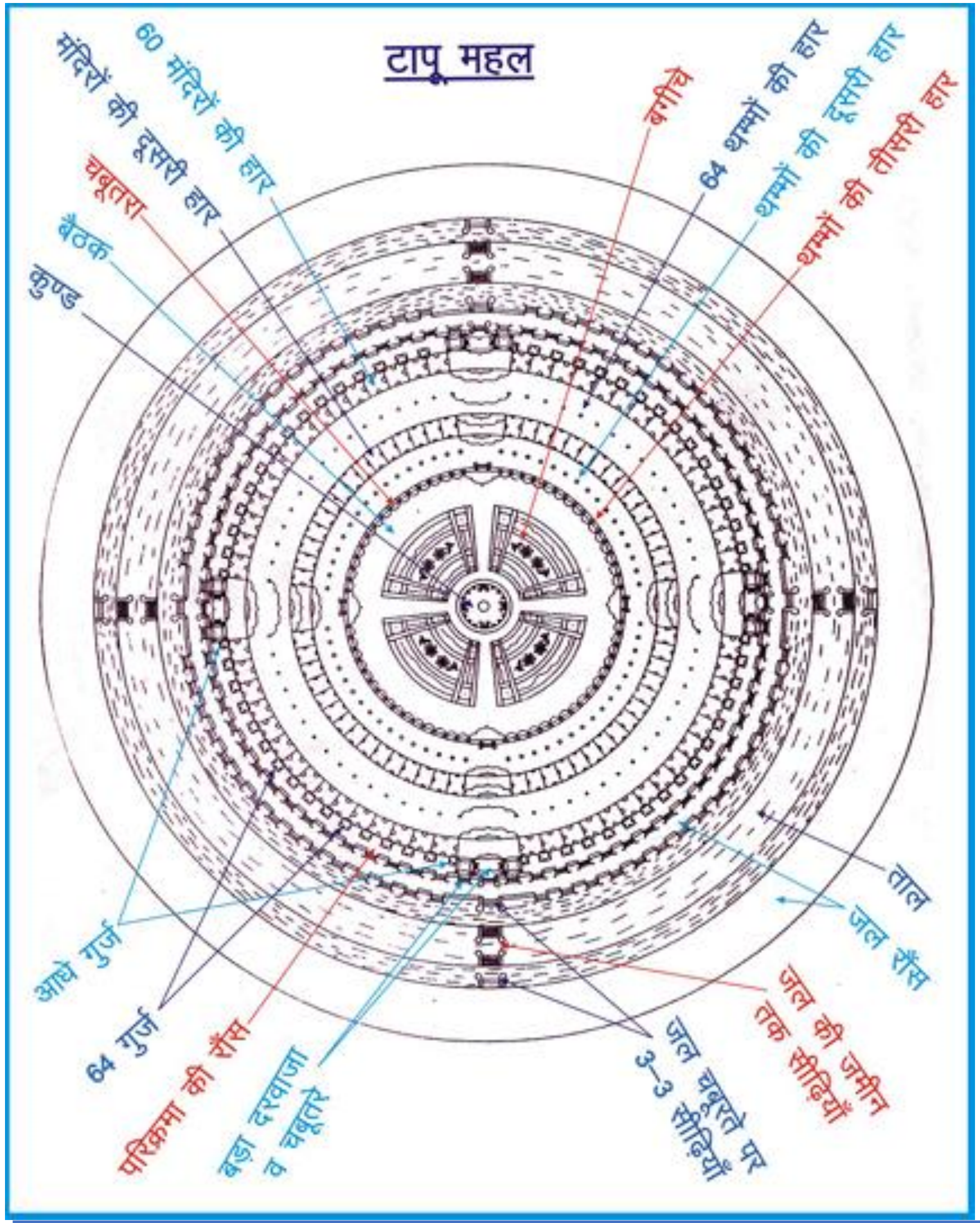
टापू महल
60 मंदिरों की हार
मंदिरों की दूसरी हार
चबूतरा
बैठक
कुण्ड
बगीचे
64 थम्भों की हार
थम्भों की दूसरी हार
थम्भों की तीसरी हार
ताल
जल रौंस
जल की जमीन तक सीढ़ियाँ
जल चबूतरे पर 3-3 सीढ़ियाँ
बड़ा दरवाजा व चबूतरे
परिक्रमा की रौंस
64 गुर्ज
आधे गुर्ज

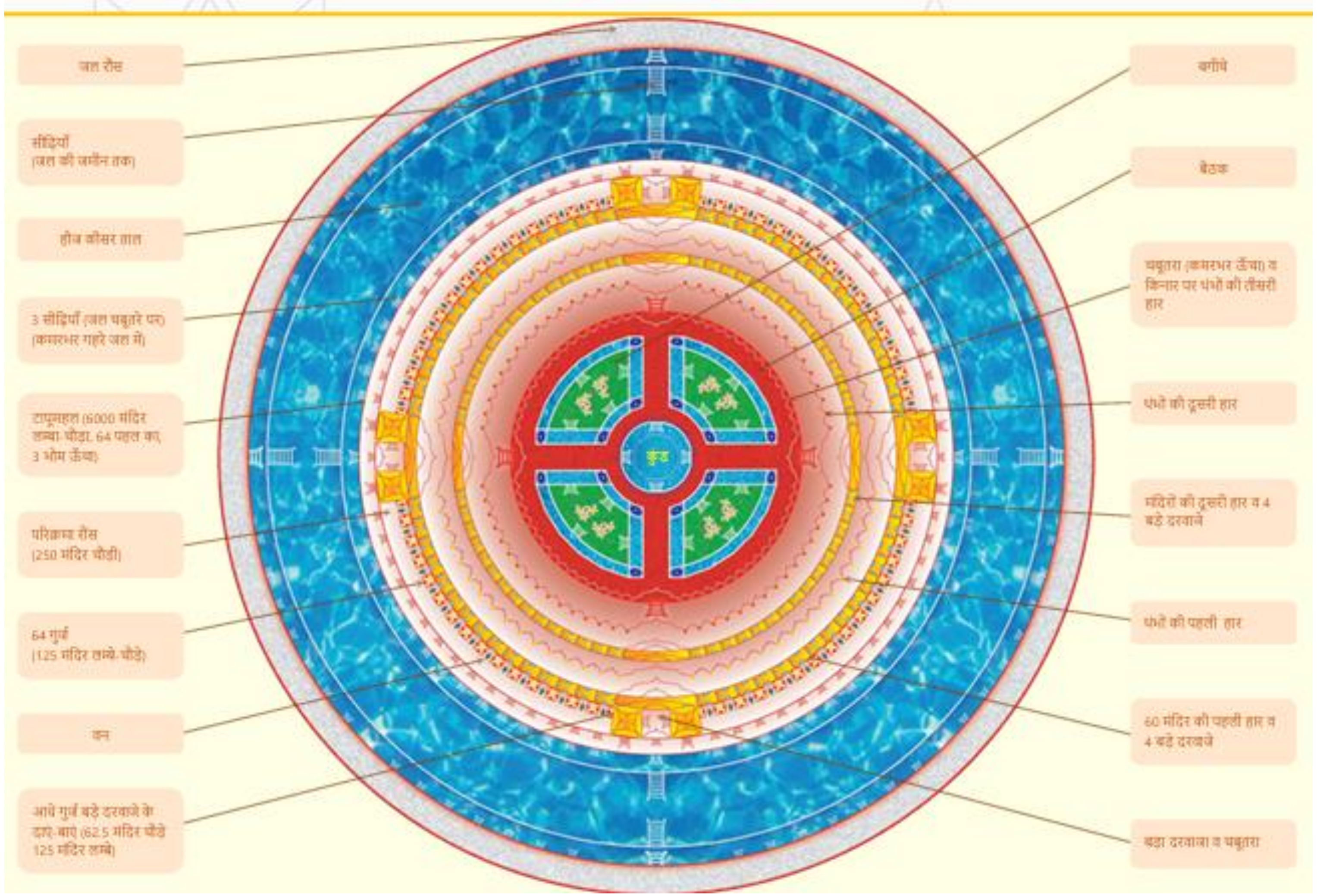
जल रौंस
सीढ़ियाँ
(जल की जमीन तक)
हौज कौसर ताल
3 सीढ़ियाँ (जल चबूतरे पर)
(कमरभर गहरे जल में)
टापूमहल (6000 मंदिर लम्बा-चौड़ा, 64 पहल का, 3 भोम ऊँचा)
परिक्रमा रौंस
(250 मंदिर चौड़ी)
64 गुर्ज
(125 मंदिर लम्बे-चौड़े)
वन
आधे गुर्ज बड़े दरवाजे के दाएं-बाएं (62.5 मंदिर चौड़े 125 मंदिर लम्बे)
कुंड
बगीचे
बैठक
चबूतरा (कमरभर ऊँचा) व किनार पर थंभों की तीसरी हार
थंभों की दूसरी हार
मंदिरों की दूसरी हार व 4 बड़े दरवाजे
थंभों की पहली हार
60 मंदिर की पहली हार व 4 बड़े दरवाजे
बड़ा दरवाजा व चबूतरा

जब खूबी ताल यों देखिये , चढ़ चाँदनी पर ।
फिरती पाल बन दयोहरी , जल सोभित अति सुंदर ।।

हौज कोसर - टापू महल की चाँदनी

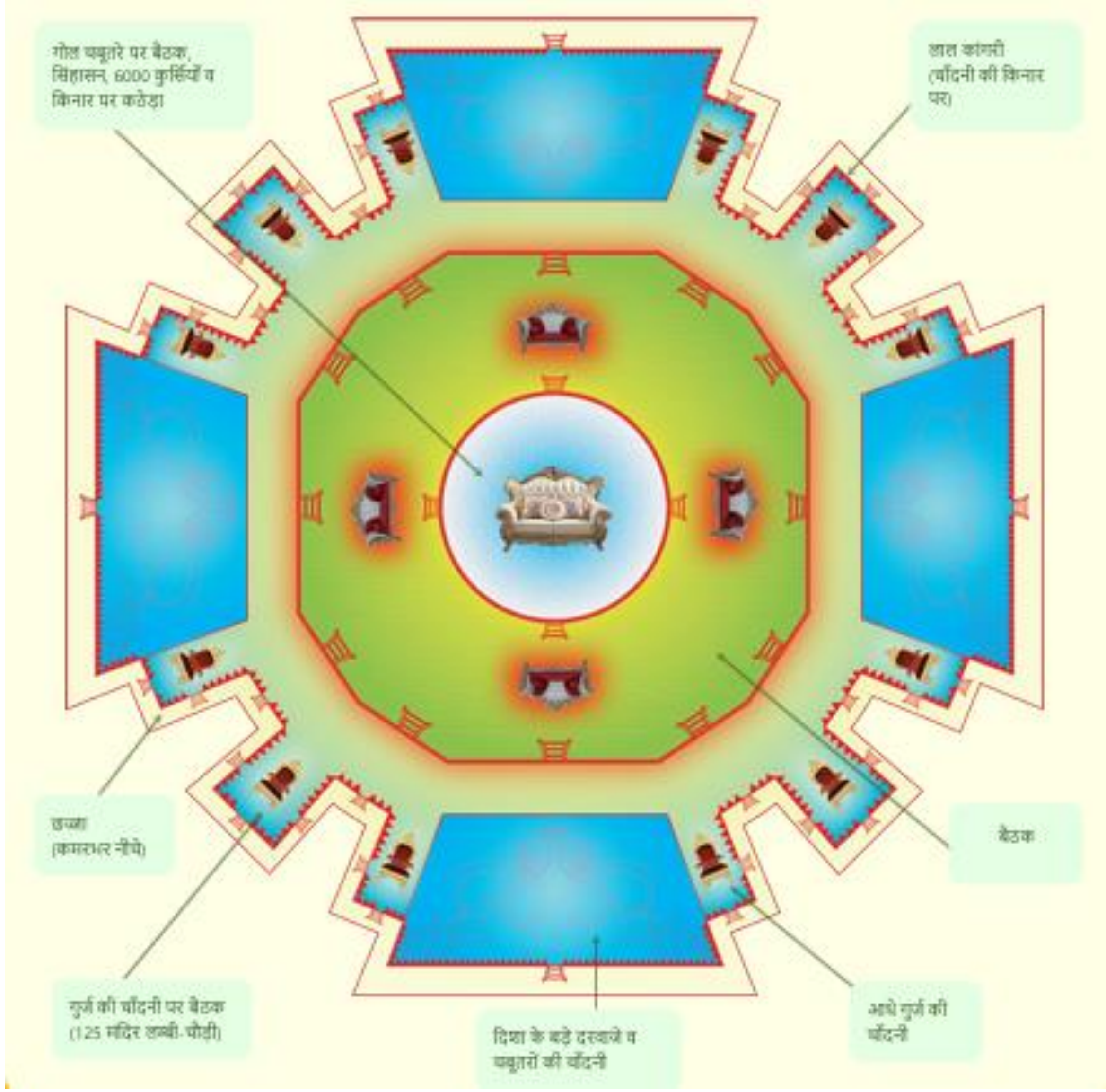

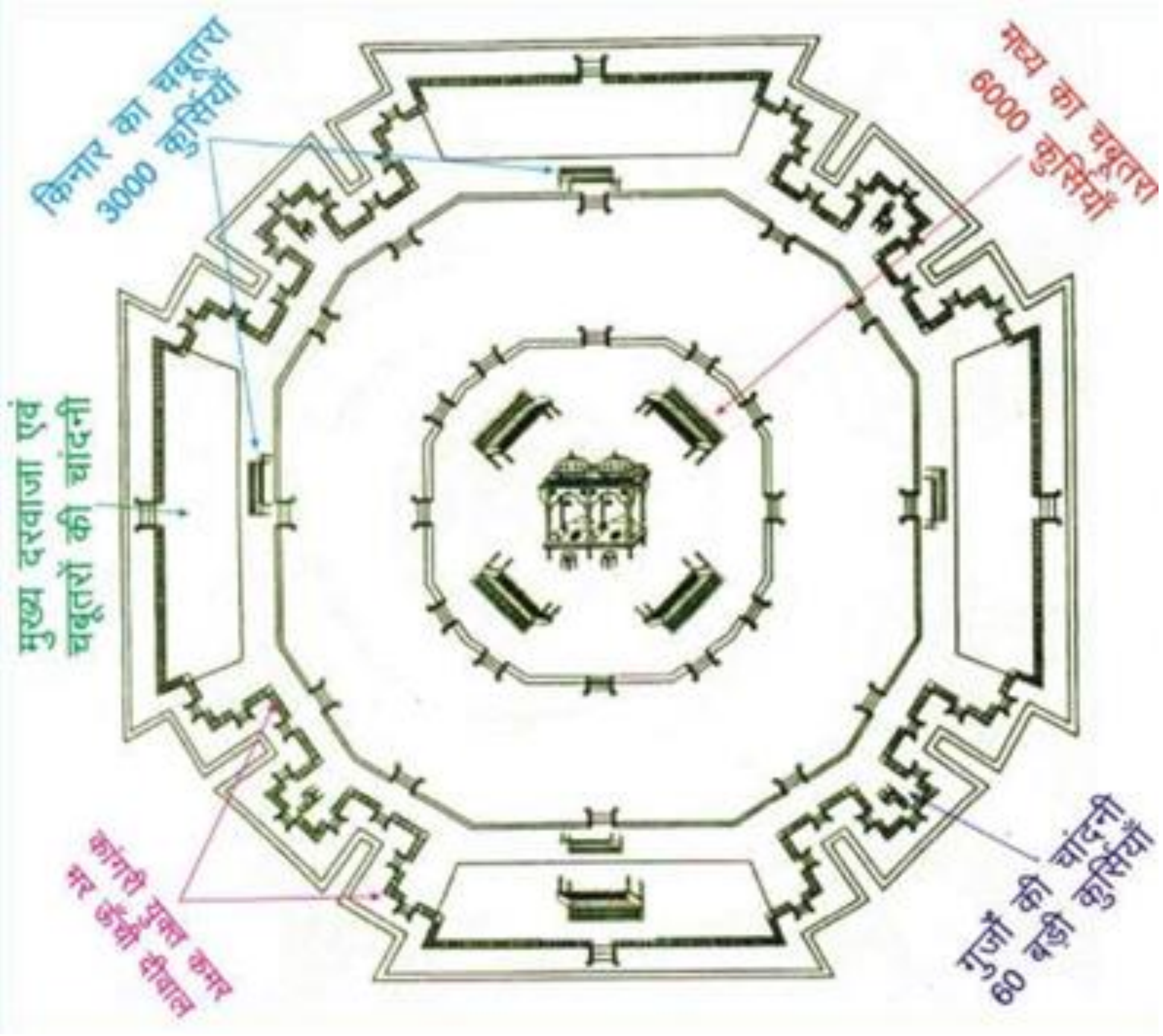

जब खूबी ताल यों देखिये , चढ़ चाँदनी पर ।
फिरती पाल बन दयोहरी , जल सोभित अति सुंदर ।।
चाँद चौदमी रात का , बैठे चाँदनी नूरजमाल ।
सनमुख सबे बैठाए के , करें खावंद रूहें खुसाल ।।
अमृत खसम रूहन पर , नूर नजरों सींचत ।
सो रस रूहें रब का , सनमुख रोसन पीवत ।।

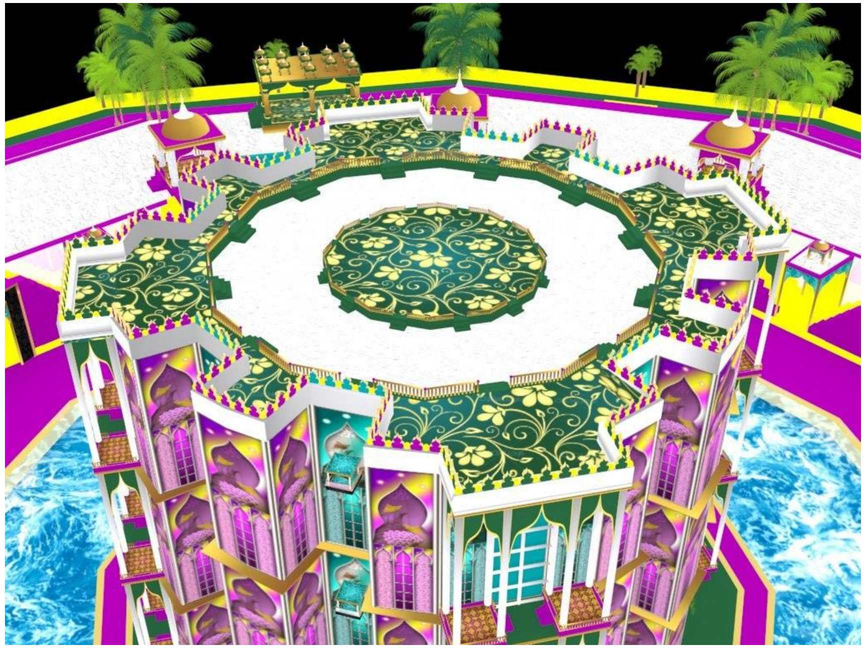

हौज कोसर की लीला & चितवनि

- आठ परदक्षना
- हौज कोसर पश्चिम दिशा से
- हौज कोसर पूर्व दिशा से

1 4 इत परदक्षना आठ हैं, पांच दरखतों दरम्यान ।
तहां गिनती चार भई, पांचमी देहुरी दरम्यान जान 5 ।
6 छठी परकोटे चढ़ उतर, सातमी पाल अन्दर 7 ।
8 आठमी जल लगे, आओ मोमिन ताके अन्दर ।।

अब अन्दर मोहोल में, रहे परदक्षिना गृदवाए ।
रहे सब जोगबाई, रमने की सुखदाए ।।

सेज संदूके साज सब, लवाजमें नहीं सुमार ।
हक हादी रूहें रमें, जित नित करें बिहार ।।

चितवनि - आठ परदक्षना

चितवनि
Path to
हौज कौसर
पश्चिम दिशा से

पाल की ऊपर की शोभा & झुण्ड का घाट

चौथा द्वार देहुरी का, चबुतरे सनमुख ।
हक हादी रूहें खेलत, सुन मोमिन पावत सुख ॥

अब कहूं झुण्ड घाट की, जो है तरफ पश्चिम ।
जिमी जवेर हीरे की, जाने मोमिन रूह आतम ॥

जब आवत इत अर्स से, चढ़िए इन घाट ताल ।
चबूतरे दोए द्योहरी, सीढ़ियां चढ़ते होत खुसाल ॥

जब आइए पाल के उपर, गृद हिंडोले होए ।
हक हादीं रूहें, हींचत हैं इत सोए ॥

जब हक आवत ताल को, आए बिराजत इत ।
सो खेल जल का करके, ऊपर सौक[1] को बैठत ॥

कई रंग इन दरखतों, अनेक रंग इन पात ।
अनेक रंग फल फूल में, याकी इतहीं होवे बात ॥

जल के जेते जानवर, जिन रंग तले निकसत ।
सो तैसा ही रंग भासत, सुख शोभा कहूं क्यूं कर इत ॥

पीछे तले या ऊपर, रंग भर रूहें खेलत ।
ए खुसाली खावंद की, जुबां क्या करसी सिफत ॥

हौज कोसर की चितवनि - पूर्व

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

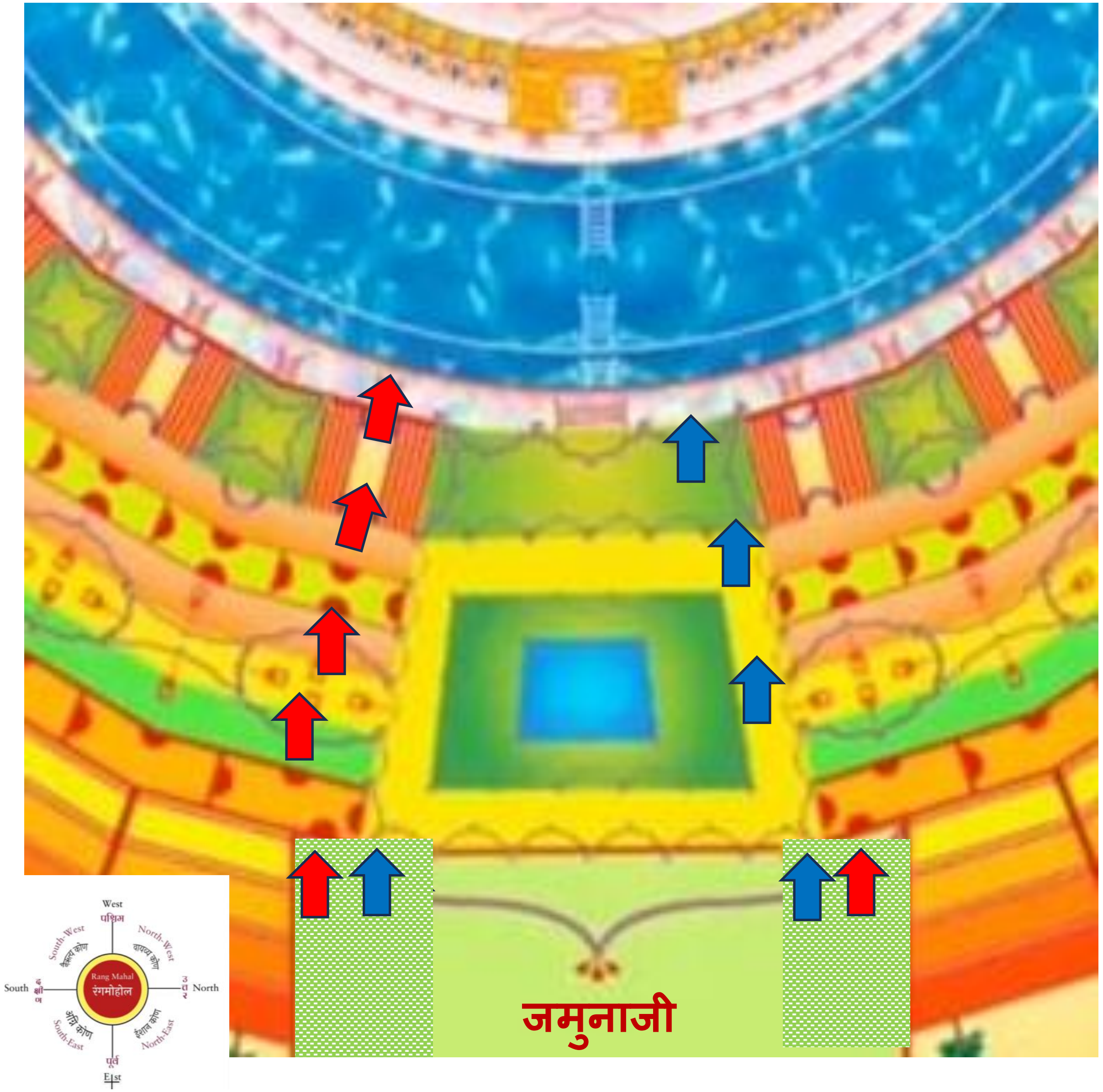

चितवनि
Path to
हौज कोसर
पूर्व दिशा से

चोरस पाल की अंदर की मोहलात से

16 देहूरियाँ घाट से

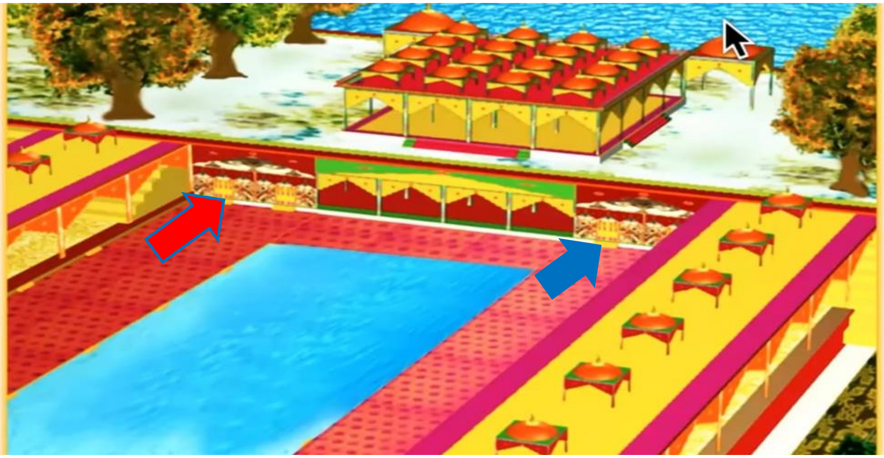

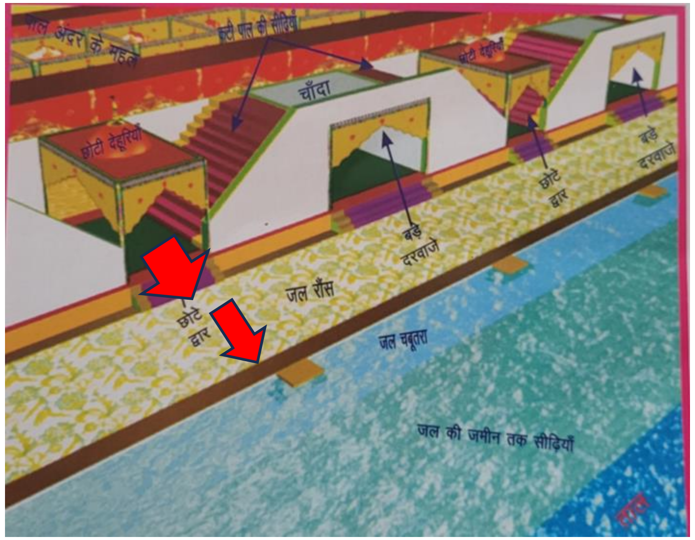

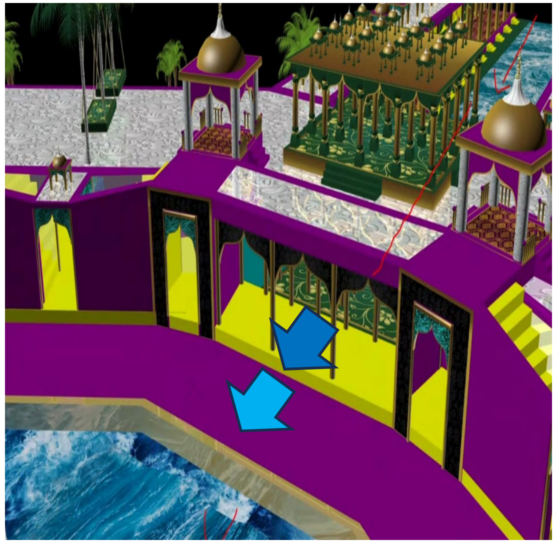

चोरस पाल की अंदर की मोहलात से

16 देहूरियाँ घाट से

हौज कोसर की शोभा & लीला

इन द्वार से उतर के, आया एक चबूतर ।
उपर छाया बन की, आइयों सीढ़ी उतर ॥

इतही चबूतरे आइए, जहां परदक्षना गृदवाए ।
चोपन बाटे चौडे, हाथ लगते जल पोहोंचाए ॥

इतही चबूतरे आइए, जहां परदक्षना गृदवाए ।
चोपन बाटे चौडे, हाथ लगते जल पोहोंचाए ॥

तहां सीढ़ियां उतरिए, आइए चबूतरे पर ।
तहां छाती लों जल है, ए सुख कहूं क्यूं कर ॥

ऐसे चबूतरे पगथिए, उतरते गए लग जमीन ।
सामे आए मुकाबिले, ए देखो दिल आकीन ॥

एह मुकाबिले टापू का, चबूतरा सीढ़ियां यों ही जान ।
जिमी चौड़ी रही तले, इन दोनों के दरम्यान ॥

इत रंग जवेरन के, हांस हांस के होए ।
सामे वही रंग शोभित, बिना मोमिन ना जाने कोए ॥

एक जरा पड़ा होए, सो सब आवत नजर ।
कमल फूल कई भांत के, देखे रंग मानो हुए फजर ॥

जल के जेते जानवर, जिन रंग तले निकसत ।
सो तैसा ही रंग भासत, सुख शोभा कहूं क्यूं कर इत ॥

होज कोसर की शोभा

पांच हार दरखत की, ढांप लई ताल की पाल ।
ए नूर जवेरों झलकत, देखत होईए खुसाल ।।

पाल एकासी ऊंची हिस्से, ऊंची चढ़ती होए ।
ऊपर एकासी बाटे चौड़ी, कहूं बेवरा दरखत सोए ।।

जो सत्ताइस हिस्से बाकी रहे, तहां देहुरियां चौरस ।
सत्ताइस हिस्से भर लिया, जो ए जवेर ठौर अरस ।।

दोनों बगलों चबूतरे, सीढियां उतरी जब ।
परकोटा दोनों के तिन को, आए चौक पड़ा आगे तब ।।

दूसरी देहूरी के चबूतरे, सीढ़ियां उतरी जोए ।
भई साम सामे मुकाबिल, एक द्वार छोटा मेहेराबी होए ।।

एक द्वार तरफ पाल के, एक तरफ पाल के द्वार ।
एक बाएं एक दाएं, ए जो कहे दोनों अलंकार ।।

होज कोसर की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

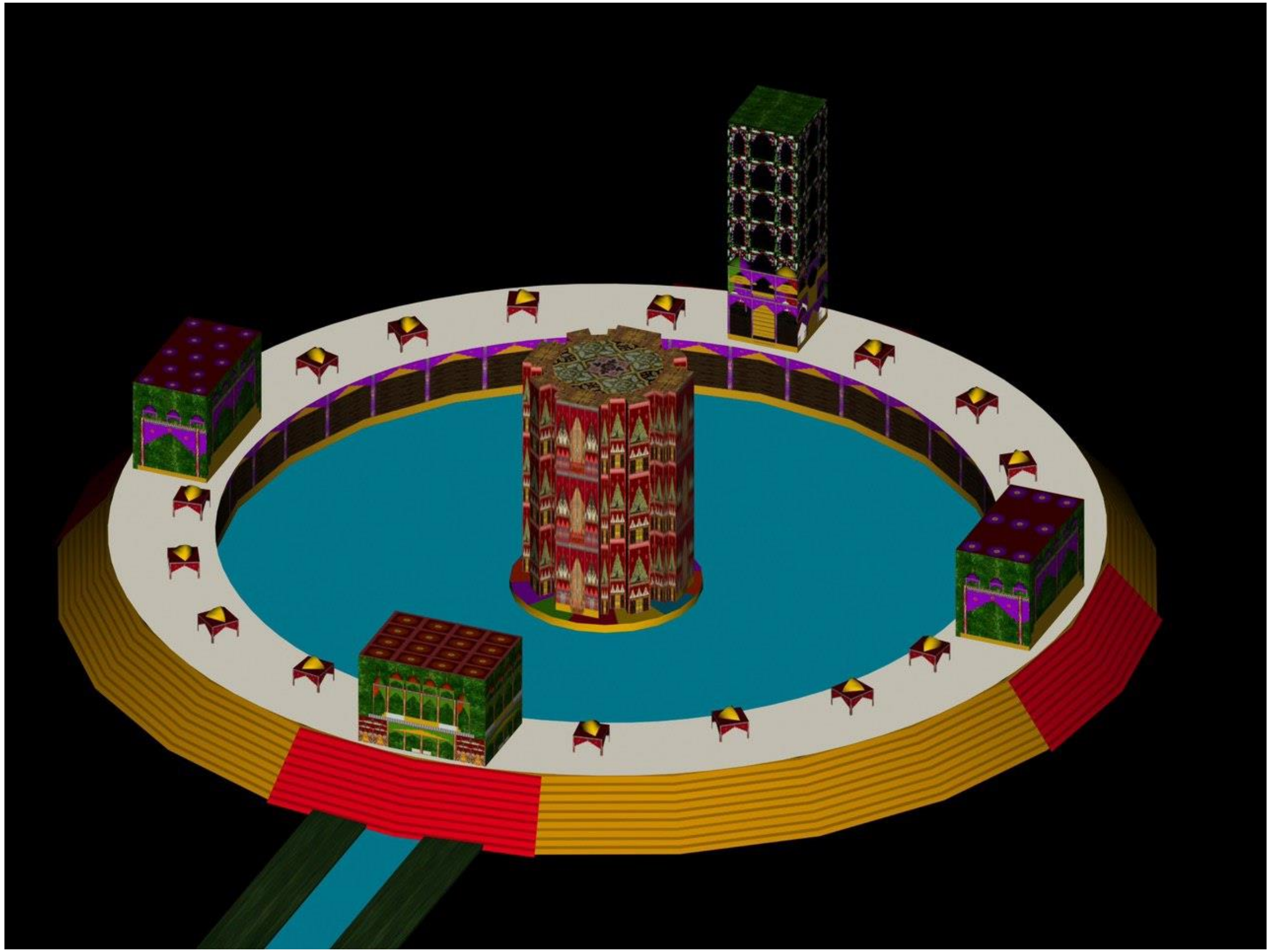

एक सौ अट्ठाइस हांस, पाल मिने शोभाए ।
ऐसे ही एक सौ अट्ठाइस, टापू के सुखदाए ॥

अब कहूं हौज कौसर, अन्दर आए सको सो आओ ।
जो रूह होवे अरस की, ऐसा ना पाओ दाओ ॥

एक हीरे की पाल है तिन में कई मोहोलात ।
गृद देहूरिया वन हैं, क्यूं कहूं फल फूल पात ॥

दुनियां चौदे तबक में, जब की भै पैदाश ।
तब के सब कोउ खोजत, ए रहि पावन की आश ॥

ए जो ताल की केहेत हों, देखो मोमिनों तुम ।
इन जिमी देखावत, हक सुभान का हुकम ॥

सो आए लगा ताल को, घेर लिया गृदवाए ।
बेवरा इन का पेहेले कह्या, अब ताल को देखो आए ॥

होज कोसर की शोभा

एक हीरे की पाल है , तिनमें कई मोहलात ।
गिरद दयोहरी कई वन हैं , क्यों कहूँ फल फूल पात ।।
कई रंग इन दरखतों , अनेक रंग इन पात ।
अनेक रंग फल फूल में , याकी इतही होवे बात ।।

ए भोम इन विध की , पाऊं ना खूंचत रेत ।
खेलत हैं इत रूहें , नए नए सुख लेत ।।
ऊपर बन बुजरक , कई हिण्डोले हींचत ।
कई डारी बन झूमत , कई विध खेल करत ।।

Sahoor

OR

Quiz